LIFESIGN HOROSCOPE

जननी जन्म सौख्यानाँ वर्धनी कल सँपदाँ
पदवी पूर्व पुण्यानाँ लिख्यते जन्म पत्रिका

Indian Astrology Software

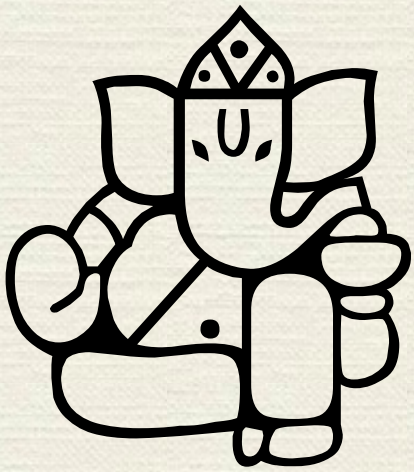

जननी जन्म सौख्यानाँ
वर्धनी कु ल सँपदाँ
पदवी पूर्व पुण्यानाँ
लिख्यते जन्म पंत्रिका

माता और संतान की भलाई के लिए
परिवार की संतोष वृद्धि के लिए
प्राचीन धार्मिक अनुष्ठानों के आयोजन हेतु
इस कुंडली का निर्माण किया गया

पंचाग फलादेश

नाम : GANESH S (पुरुष)

सप्ताह के दिन में। : शनिवार

शनिवार में जन्म लेने पर यह विदित होता है कि जब तक कोई परिस्थिति विवश ना करे आप निष्क्रीय रहना चाहते हैं। बकवास करने की प्रवृत्ति पर आपको नियंत्रण रखना चाहिए। अक्सर आपको लगेगा कि आप जितना चाहते है उतना खर्च नहीं कर सकते। आप भावनात्मक और कोमल प्रकृति के होंगे।

जन्म नक्षत्र : पूर्वाषाढा

आपका जन्म नक्षत्र पूर्वाषाढा है। यह नक्षत्र पथ का २०वाँ नक्षत्र है। आप कल्पनाशील एवं मीठी बोली से अनुगृहीत हैं। आप दूसरों को उपदेश देते हैं और उनसे विचार-विमर्श करते हैं। पर दूसरों के उपदेश नहीं मानते हैं। आप को अपने मनोभावों के अनुसार एक वातावरण मिलता है जिससे आपकी उन्नति हो। माँ-बाप की संपत्ति की प्रतीक्षा करेंगे। दूसरों की सहायता अधिक होने पर आपके पत्नी के मन में शंकाएँ हो जायेंगी। किसीको पूर्ण रूप से विश्वास पात्र मानना हानिप्रद होगा। आप वचन और प्रतिज्ञा तोड़ने में विचार नहीं करेंगे। जीवन का आदिकाल परिवार की भलाई करके बिताऐंगे। आपके मित्र अस्थिर रहते हैं। शायद आपका विवाह देरी से हो या किसी विशेष परिस्थिति में हो, वैवाहिक जीवन सुखमय होगा। पिता की अपेक्षा दूसरों से सहयोग अधिक मिलेगा। निडरता उत्तम गुण माना जाता है, पर दूसरों की अकारण आलोचना को अच्छा नहीं माना जाता। दूसरों को उपदेश कम दीजिए और स्वयं की ओर अधिक देखिए। दूसरों का उपकार, बिना जाति-वर्ण भेद के आपसे सदा होता रहेगा। भाग्य देवता सदा आपके अनुकूल रहेगा। लोगों का स्नेह-प्यार प्राप्त रहेगा। अनेक विषयों की जानकारी होगी। स्वाभिमान पर आघात असह्य होगा। एकान्तप्रिय होंगे। धनसंचय में प्रवीण होंगे। मध्यावस्था के बाद अधिक सुखी होंगे। अपनी पत्नी के प्यार और आदर से जीवन निश्चिन्त रहेगा। पत्नी के साथ भ्रमण करने के शौकीन होंगे। जल यात्रायें भी होगी। मनमानी करना आपके लिए सामान्य बात है। वाक् कौशल से लोगों को सरलता से प्रभावित कर सकेंगे। शीतज्वर और छाती तथा नाक के विकारों से बचें। जीवन में उत्तरोत्तर उन्नति होती रहेगी।

तिथि : नवमी

नवमी तिथि में पैदा होने वालों की अपनी इच्छाओं की पूर्ति होती है। प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए अति पुरुषार्थ करने वाले हैं। धन और साधन कमाने में विशेष चतुरता प्रकट करने वाले हैं। समस्याओं का कुशलता पूर्वक समाधान करने में निपुण हैं। आप हर कार्य को बड़ी कुशलता से पूर्ण करते हैं। समाज में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त होगा। प्रतिस्पर्धी को पराजित करने में प्रवीणता प्राप्त है। सत्पुरुषों का विरोध और आचार हीन व्यक्तियों का साहचर्य पसंद होगा।

करण : तैतिल

क्योंकि आपने तैतिल करण में जन्म लिया है अपने विचारों और वाक्यों पर टिका रहना मुशिकल समझते हैं। अक्सर आप अपने अनुमानो पर अडिग नहीं रहते। आप अपना आवास हमेश बदलते रहेंगे।

नित्य योग : शिव

आपका जन्म शिव नित्ययोग में होने से आप गंभीर और अन्य लोगों के आकर्षण का केन्द्र बनेंगे। किसीकी सलाह परामर्श के बिना आप स्वयं पुरुषार्थ से कोई काम नहीं कर सकते। अपनी कार्यशक्ति और निपुणता अन्य के सामने प्रकट करने में असफल रहते हैं। आप ईश्वर भक्त और उसकी शक्तियों में श्रद्धा रखनेवाले व्यक्ति हैं। इस कारण अत्यधिक आत्मबल के मालिक हैं। मन्त्र में रुचि होगी। इंन्द्रियों को वश में रख पाना आपके लिए सरल होगा।

नाम	: GANESH S
लिंग	: पुरुष
जन्म तिथि	: 1 अप्रैल 1978 शनिवार
जन्म समय(Hr.Min.Sec)	: 12:42:01 PM Standard Time
समय क्षेत्र (Hrs.Mins)	: 05:30 ग्रीनवीच रेखा के पूर्व
जन्म स्थान	: Chennai
रेखांश&अक्षांश(Deg.Mins)	: 80.16 पूर्व, 13.5 उत्तर दिशा
अयनांश	: चैत्रपक्ष = 23 डिग्री(अंश). 33 मिनिट(कला). 13 सेकेन्ड(विकला)
जन्म नक्षत्र - नक्षत्र पद	: पूर्वाषाढा - 4
जन्म राशी - राशी स्वामी	: धनु - गुरू
लग्न - लग्न स्वामी	: मिथुन - बुध
तिथि	: नवमी, कृष्णपक्ष

सूर्योदय	: 06:05 AM Standard Time
सूर्योस्त	: 06:20 PM
दिनमान(Hrs. Mins)	: 12.15
दिनमान(Nazhika.Vinazhika)	: 30.38
स्थानीय समय	: Standard Time - 9 Min.
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि	: शनिवार
कलिदिन	: 1855134
दशा पद्धति	: विंषोत्तरी, साल = 365.25 दिन

नक्षत्र स्वामी	: शुक्र
गण, योनी, पशु	: मनुष्य, पुरुष, वानर
पक्षी, वृक्ष	: मुर्गा, बांस
चन्द्र अवस्था	: 12 / 12
चन्द्र वेला	: 36 / 36
चन्द्र क्रिया	: 60 / 60
दग्द्ध राशी	: सिंह,वृश्चिक
करण	: तैतिल
नित्य योग	: शिव
सूर्य की राशी - नक्षत्र का स्थान	: मीन - रेवती
अंगादित्य का स्थिति	: पैर
Zodiac sign (Western System)	: Aries

योग बिंदु - योगी नक्षत्र	: 347:27:24 - रेवती
योगी ग्रह	: बुध
दुय्यम योगी	: गुरू
अवयोगी नक्षत्र - ग्रह	: मृगशिरा - मंगल
आत्मकारक (आत्मा) - कारकांश	: चंद्र - वृश्चिक
अमात्यकारक (मन / ज्ञानशक्ति)	: सूर्य
अस्द्ध लग्न (पद लग्न)	: कुंभ
धन अस्द्ध	: वृषभ

ग्रहों का सायन रेखांश

ग्रहों का रेखांश पश्चमी पद्धती के अनुसार दिया गया है। जिसमें युरेनस, नेपच्युन और प्लूटो को भी शामील किया गया है।

पाश्चात्य पद्धति के अनुसार राशिचक्र में आप की राशी - मेष

ग्रह	रेखांश अंश:कला:विकला	ग्रह	रेखांश अंश:कला:विकला
लग्न	111:10:38	गुरू	88:35:46
चंद्र	290:1:43	शनी	144:9:58 वक्री
सूर्य	11:12:7	हार्शल	225:42:28 वक्री
बुध	26:7:8	नेप्टयून	258:17:4 वक्री
शुक्र	28:2:38	प्लूटो	195:26:27 वक्री
मंगल	116:59:18	अयन	185:46:23

ग्रहों के निरयन रेखांश भारतीय ज्योतिष शास्त्र के आधार पर किया गया है। सभी गणनाएं, कोष्टक, विवेचन विश्लेषण समय संस्कार आदि भारतीय फलित ज्योतिष के 'सायन मूल्यों' के आधार पर की गई है।

ग्रहों का निरायन रेखांश

भारतीय फलित ज्यातिष में सभी गणनाएँ और संस्कार सायन पद्धति के अनुसार किये जाते हैं। सायन रेखांश से निरायण रेखांश को घटा कर निरायण मूल्य ज्ञात किया जाता है।

अयनांश की गणना अलग अलग पद्धती से की जाती है। उनके प्रकार और आधार नीचे बताये गये हैं:

चैत्रपक्ष = 23 डिग्री(अंश). 33 मिनिट(कला). 12 सेकेन्ड(विकला).

ग्रह	रेखांश अंश:कला:विकला	राशी	राशी के रेखांश अंश:कला:विकला	नक्षत्र	पद
लग्न	87:37:25	मिथुन	27:37:25	पुनर्वसु	3
चंद्र	266:28:30	धनु	26:28:30	पूर्वाषाढा	4
सूर्य	347:38:54	मीन	17:38:54	रेवती	1
बुध	2:33:55	मेष	2:33:55	अश्विनी	1
शुक्र	4:29:26	मेष	4:29:26	अश्विनी	2
मंगल	93:26:5	कर्क	3:26:5	पुष्य	1
गुरू	65:2:34	मिथुन	5:2:34	मृगशिरा	4
शनी	120:36:45	सिंह	0:36:45 वक्री	मघा	1
राहु	162:13:11	कन्या	12:13:11	हस्त	1
केतु	342:13:11	मीन	12:13:11	उत्तराभाद्रपदा	3
गुलिक	0:48:6	मेष	0:48:6	अश्विनी	1

नक्षत्र का स्वामी / उप स्वामी / उप उप स्वामी कोष्टक

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	उप स्वामी	उप उप स्वामी
लग्न	पुनर्वसु	गुरू	शुक्र	राहु
चंद्र	पूर्वाषाढा	शुक्र	केतु	शनी
सूर्य	रेवती	बुध	बुध	मंगल
बुध	अश्विनी	केतु	शुक्र	बुध
शुक्र	अश्विनी	केतु	चंद्र	केतु
मंगल	पुष्य	शनी	शनी	शनी
गुरू	मृगशिरा	मंगल	सूर्य	राहु
शनी	मघा	केतु	केतु	शनी
राहु	हस्त	चंद्र	राहु	गुरू
केतु	उत्तराभाद्रपदा	शनी	मंगल	राहु
गुलिक	अश्विनी	केतु	शुक्र	शुक्र

निरयन सारिणी संक्षिप्त (डिग्री(अंश). मिनिट(कला). सेकेन्ड(विकला).)

ग्रह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद	ग्रह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद
लग्न	मिथुन	27:37:25	पुनर्वसु/3	गुरू	मिथुन	5:2:34	मृगशिरा/4
चंद्र	धनु	26:28:30	पूर्वाषाढा / 4	शनी	सिंह	0:36:45R	मघा/1
सूर्य	मीन	17:38:54	रेवती / 1	राहु	कन्या	12:13:11	हस्त /1
बुध	मेष	2:33:55	अश्विनी /1	केतु	मीन	12:13:11	उत्तराभाद्रपदा /3
शुक्र	मेष	4:29:26	अश्विनी /2	गुलिक	मेष	0:48:6	अश्विनी /1
मंगल	कर्क	3:26:5	पुष्य /1				

राशी

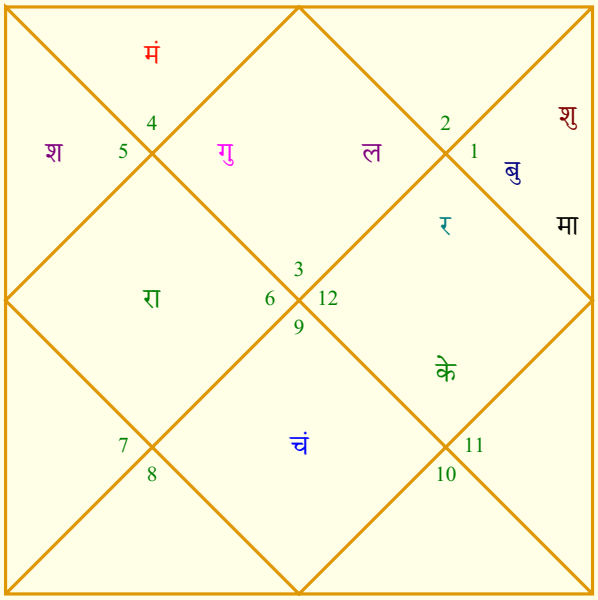

जन्म के समय दशा का भोग्य काल = शुक्र 0 साल, 3 मास, 13 दिन

नवांश

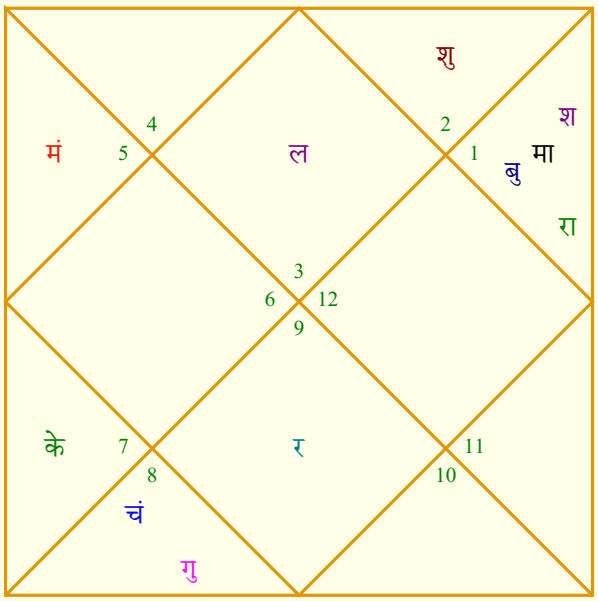

भाव कुंडली

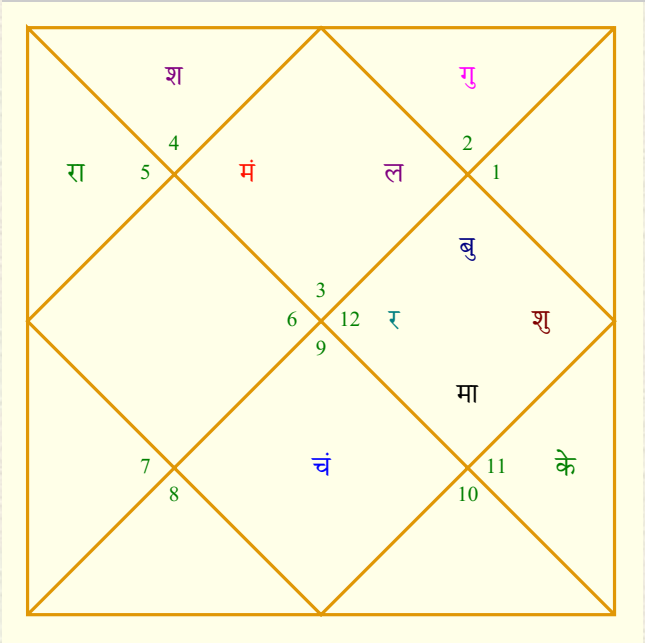

भाव कोष्टक

भाव	आरंभ (प्रारंभ) डिग्री(अंश):मिनिट(कला):सेकेन्ड(विकला)	मध्य (मध्य) डिग्री(अंश):मिनिट(कला):सेकेन्ड(विकला)	अन्त्य (अंत) डिग्री(अंश):मिनिट(कला):सेकेन्ड(विकला)	ग्रह भाव स्थिती
1	72:37:25	87:37:25	102:37:25	मं
2	102:37:25	117:37:25	132:37:25	श
3	132:37:25	147:37:25	162:37:25	रा
4	162:37:25	177:37:25	192:37:25	
5	192:37:25	207:37:25	222:37:25	
6	222:37:25	237:37:25	252:37:25	
7	252:37:25	267:37:25	282:37:25	चं
8	282:37:25	297:37:25	312:37:25	
9	312:37:25	327:37:25	342:37:25	के
10	342:37:25	357:37:25	12:37:25	र,बु,शु,मा
11	12:37:25	27:37:25	42:37:25	
12	42:37:25	57:37:25	72:37:25	गु

सुदर्शन चक्र

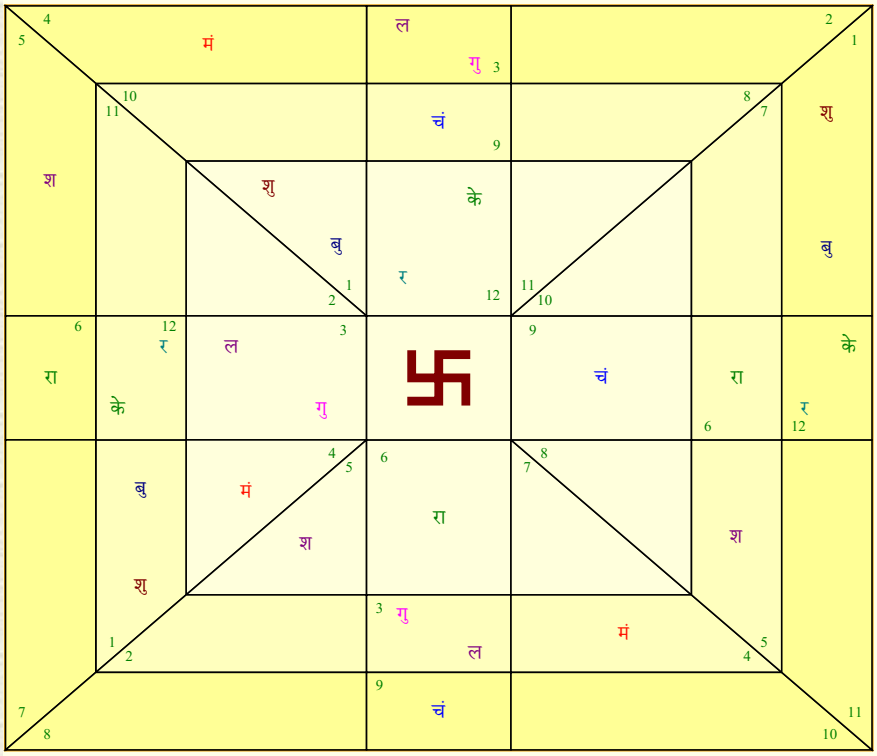

चं = चंद्र र = सूर्य बु = बुध शु = शुक्र मं = मंगल गु = गुरु श = शनी रा =राहु के = केतु

उपग्रह

हर ग्रह की स्तिथिनुसार उपग्रह की भी गणना की जाती है। सूर्य के रेखांश पर आधारित - चन्द्र, शुक्र, मंगल, राहु और केतु के उपग्रह इस प्रकार है।

धुमादी योग के उपग्रह

ग्रह	उपग्रह	गणना प्रणाली
मंगल	धूम	सूर्य का रेखांश + 133 डिग्री(अंश). 20 मिनिट(कला).
राहु	व्यतिपात	360 - धूम
चंद्र	परिवेश	180 + व्यतिपात
शुक्र	इन्द्रचाप	360 - परिवेश
केतु	उपकेतु	इन्द्रचाप + 16 डिग्री(अंश). 40 मिनिट(कला).

सूर्य, बुध, गुरु, शनी के उपग्रहों का तथा मंगल के अन्य उपग्रहों की काल गणना दिवस - रात्रि को समभाग में विभाजित करके की जाती है।

प्रथम भाग दिन के स्वामी को समर्पित है, तत्पश्च्यात अन्य स्वामी साप्ताहिक क्रमानुसार होते हैं। आठवे भाग का कोई स्वामी नहीं होता।जन्म रात्रि के समय हुआ हो तो, आठ समभागो में विभाजीत पहले सात भागों को ग्रहों का स्वामित्व दिया जाता है। यह सप्ताह के पाँचवे दिन से गिना जाता है।

रेखांश की गणना के लिये दो पद्धतियों का उपयाग किया गया है।प्रथम पद्धति के अनुसार, प्रारंभ समय काल (ग्रहों के स्वामी) ग्रहाधीपती के अधिन रहता है। दूसरी पद्धति के अनुसार काल के अंतिम चरण ग्रहाधीपती के आधिन रहता है।

गुलीक काल गणनानुसार शनी के उपग्रह की स्तिथि अनुसार एक तीसरी पद्धति का भी अनुसंधान किया गया है, जिससे धुमादी योग के उपग्रहों के रेखांश की गणना की जाती है। यह नीचे दिये गये उदयकाल पर निर्भर है।इस प्रकार से प्राप्त गुणफल को 'एस्ट्रो विज़न' कुंडली में 'मांडी' कहा गया है और जन्मपत्रिका मे मुख्य ग्रह और राशी चक्र के साथ दिया गया है।

दिन	दिन के समय जन्म	रात के वक्त जन्म
रविवार	26 घटि	10 घटि
सोमवार	22	6
मंगलवार	18	2
बुधवार	14	26
गुरुवार	10	22
शुक्रवार	6	18
शनिवार	2	14

गुलिकादी का समूह।

स्वीकृत प्रणाली : लग्न के अंन्तिम चरणों मे।

ग्रह	उपग्रह	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय
सूर्य	काल	7:36:56	9:8:48
बुध	अर्धप्रहर	12:12:33	13:44:26
मंगल	मृत्यु	10:40:41	12:12:33
गुरु	यमघंट	13:44:26	15:16:18
शनी	गुलिक	6:5:3	7:36:56

रेखांश उपग्रह

उपग्रह	रेखांश अंश:कला:विकला	राशी	राशी के रेखांश अंश:कला:विकला	नक्षत्र	पद
काल	37:39:16	वृषभ	7:39:16	कृत्तिका	4
अर्धप्रहर	101:51:59	कर्क	11:51:59	पुष्य	3
मृत्यु	80:57:5	मिथुन	20:57:5	पुनर्वसु	1
यमघंट	123:26:7	सिंह	3:26:7	मघा	2
गुलिक	13:7:32	मेष	13:7:32	अश्विनी	4
परिवेश	59:1:5	वृषभ	29:1:5	मृगशिरा	2
इन्द्रचाप	300:58:54	कुंभ	0:58:54	धनिष्ठा	3
व्यतिपात	239:1:5	वृश्चिक	29:1:5	ज्येष्ठा	4
उपकेतु	317:38:54	कुंभ	17:38:54	शततारका	4
धूम	120:58:54	सिंह	0:58:54	मघा	1

उपग्रहों के नक्षत्राधीपती / नक्षत्राधी-सहपती / नक्षत्राधी-अनुसहपती के कोष्टक

उपग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	उप स्वामी	उप उप स्वामी
काल	कृत्तिका	सूर्य	केतु	शनी
अर्धप्रहर	पुष्य	शनी	चंद्र	केतु
मृत्यु	पुनर्वसु	गुरू	गुरू	शुक्र
यमघंट	मघा	केतु	सूर्य	बुध
गुलिक	अश्विनी	केतु	बुध	शनी
परिवेश	मृगशिरा	मंगल	शनी	सूर्य
इन्द्रचाप	धनिष्टा	मंगल	बुध	मंगल
व्यतिपात	ज्येष्ठा	बुध	शनी	सूर्य
उपकेतु	शततारका	राहु	सूर्य	राहु
धूम	मघा	केतु	शुक्र	शुक्र

उपग्रह राशी

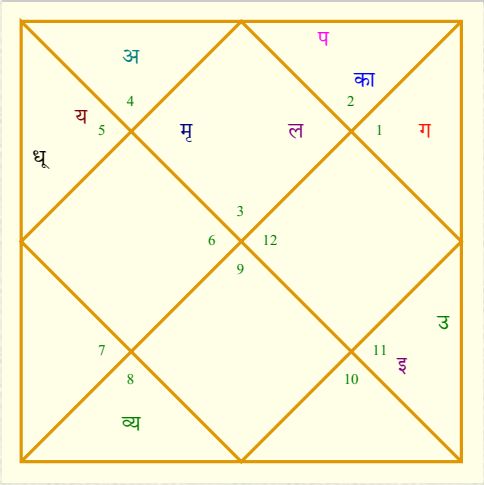

का = काल अ = अर्धप्रहर मृ = मृत्यु य = यमघंट ग = गुलिक प = परिवेश इ = इन्द्रचाप व्य = व्यतिपात उ = उपकेतु धू = धूम

कारकांश (जेमिनी सूत्र)

कारक	ग्रह
1 आत्मकारक (आत्मा)	चंद्र कारकांश: वृश्चिक
2 अमात्यकारक (मन / ज्ञानशक्ति)	सूर्य
3 भातृकारक (भाई / बहन)	गुरू
4 मातृकारक (माता)	शुक्र
5 पुत्र (संतान)	मंगल
6 जाति (संबंधी)	बुध
7 दारा (पति या पत्नी)	शनी

अरूढ पद (जेमिनी सूत्र)

कोड	अरूढ / पद	राशी
P1	अरूढ लग्न (पद लग्न)	कुंभ
P2	धन अरूढ	वृषभ
P3	पराक्रम भातृपद	तुला
P4	मात्र (सुख)	वृश्चिक
P5	मंत्र / पुत्र पद	तुला
P6	रोग / शत्रु पद	मीन
P7	धर / कलत्र /स्त्रीपद	धनु
P8	मृत्यु / मरण / आयुपद	मीन
P9	पित्र / भाग्य / धर्मपद	कुंभ
P10	कर्म / राज्यपद	कन्या
P11	लाभ / आयपद	तुला
P12	व्यय / उपपद	मीन

अरूढ चक्र

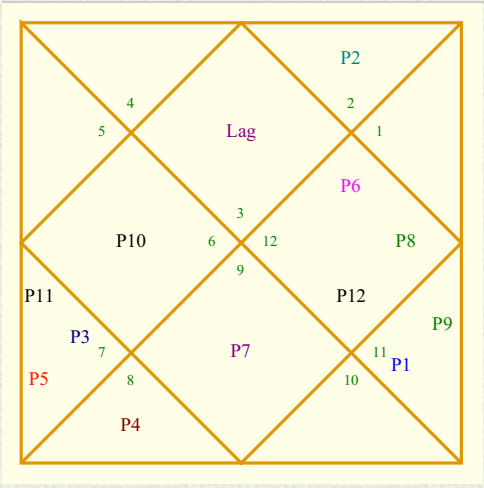

षोढसवर्ग तालिका

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	3	9	12:	1	1	4:	3	5	6:	12:	1
होरा	4:	4:	5	5	5	4:	5	5	4:	4:	5
द्रेष्क्रान	11	5	4:	1	1	4:	3	5	10:	4:	1
चतुर्थांश	12:	6:	6:	1	1	4:	3	5	9	3	1
सप्तांश	9	3	10:	1	2:	10:	4:	5	2:	8:	1
नवांश	3	8:	9	1	2:	5	8:	1	1	7	1
दशांश	12:	5	1	1	2:	1	4:	5	6:	12:	1
व्दादशांश	2:	7	7	2:	2:	5	5	5	10:	4:	1
सोडशांश	11	11	6:	2:	3	2:	11	5	3	3	1
विशान्ष	11	10:	4:	2:	3	3	8:	9	1	1	1
चतुर्विंशांश	3	2:	6:	7	8:	6:	9	5	1	1	5
भम्श	7	12:	1	3	5	1	11	1	2:	8:	1
त्रिंशांश	7	7	12:	1	1	2:	11	1	12:	12:	1
खवेदांश	1	12:	6:	4:	6:	11	7	1	11	11	2:
अक्षवेदांश	2:	12:	11	4:	7	6:	4:	5	3	3	2:
शष्टियांश	10:	1	11	6:	9	10:	1	6:	6:	12:	2:
ओजराशी गणना	10	8	7	10	10	6	11	15	7	7	13

1 - मेष 2 - वृषभ 3 - मिथुन 4 - कर्क 5 - सिंह 6 - कन्या
7 - तुला 8 - वृश्चिक 9 - धनु 10 - मकर 11 - कुंभ 12 - मीन

वर्गोत्तम

बुध लग्न गुलिक वर्गोतम में है।

षोढसवर्ग अधिपति

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	बु	=गु	+गु	=मं	=मं	+चं	~बु	~र	+बु	+गु	मं
होरा	चं	^चं	^र	+र	~र	+चं	+र	~र	=चं	=चं	र
द्रेष्क्राान	श	+र	+चं	=मं	=मं	+चं	~बु	~र	+श	=चं	मं
चतुर्थांश	गु	+बु	=बु	=मं	=मं	+चं	~बु	~र	~गु	~बु	मं
सप्तांश	गु	+बु	~श	=मं	^शु	=श	+चं	~र	+शु	+मं	मं
नवांश	बु	=मं	+गु	=मं	^शु	+र	+मं	~मं	=मं	=शु	मं
दशांश	गु	+र	+मं	=मं	^शु	^मं	+चं	~र	+बु	+गु	मं
व्दादशांश	शु	=शु	~शु	+शु	^शु	+र	+र	~र	+श	=चं	मं
सोडशांश	श	=श	=बु	+शु	+बु	=शु	=श	~र	+बु	~बु	मं
विशान्ष	श	=श	+चं	+शु	+बु	~बु	+मं	=गु	=मं	+मं	मं
चतुर्विंशांश	बु	=शु	=बु	+शु	=मं	~बु	^गु	~र	=मं	+मं	र
भम्श	शु	=गु	+मं	^बु	~र	^मं	=श	~मं	+शु	+मं	मं
त्रिंशांश	शु	=शु	+गु	=मं	=मं	=शु	=श	~मं	~गु	+गु	मं
खवेदांश	मं	=गु	=बु	~चं	+बु	=श	~शु	~मं	+श	~श	शु
अक्षवेदांश	शु	=गु	~श	~चं	^शु	~बु	+चं	~र	+बु	~बु	शु
शष्टियांश	श	=मं	~श	^बु	=गु	=श	+मं	+बु	+बु	+गु	शु

^ स्ववर्ग + मैत्रीपूर्ण = सम ~ शत्रु

वर्ग भेद

स्ववर्ग और उच्च वर्ग के लिए अंक दिए गए हैं

ग्रह	षढ़वर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोढ़सवर्ग
चंद्र	1-...	1-...	1-...	2-भेदकांश
सूर्य	1-...	1-...	2-पारिजातांश	3-कुसुमांश
बुध	0-	0-	1-...	2-भेदकांश
शुक्र	2-सुक्ष्ममांश	3-व्यजनांश	4-गोपुरांश	5-कन्दुकांश
मंगल	0-	1-...	3-उत्तमांश	4-नागपुषपांश
गुरू	0-	1-...	2-पारिजातांश	4-नागपुषपांश
शनी	0-	0-	0-	0-

षोढ़सवर्ग तालिका

राशी[D1]

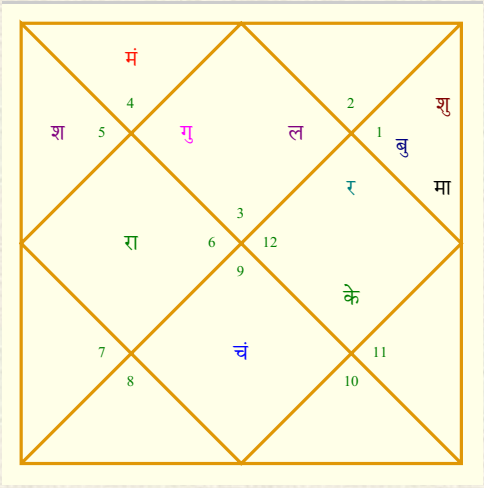

होरा[D2]

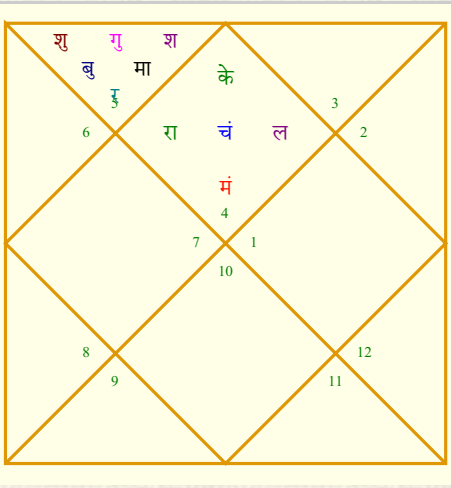

द्रेष्काण[D3]

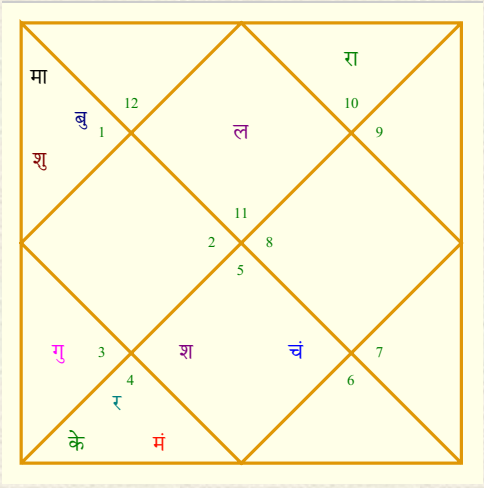

चतुर्थांश[D4]

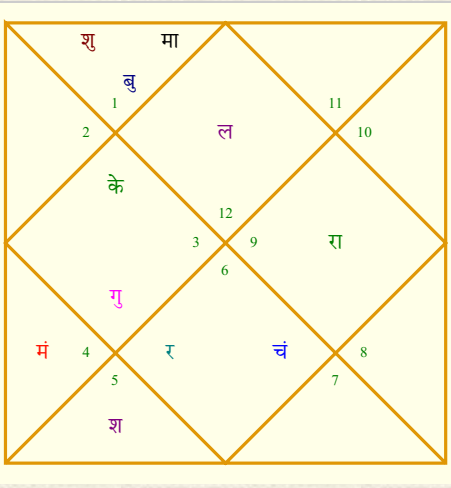

सप्तांश[D7]

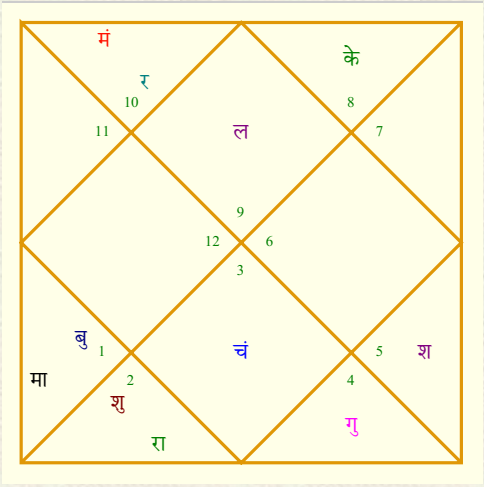

नवांश[D9]

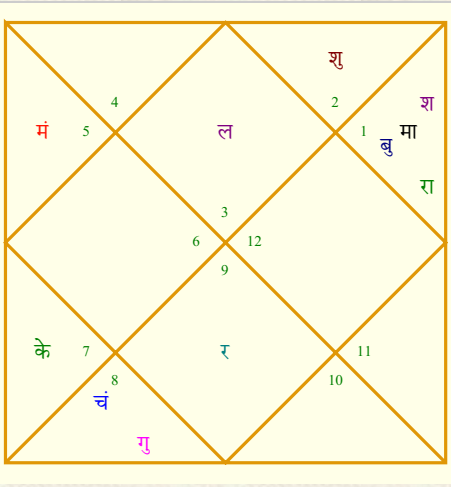

दशांश[D10]

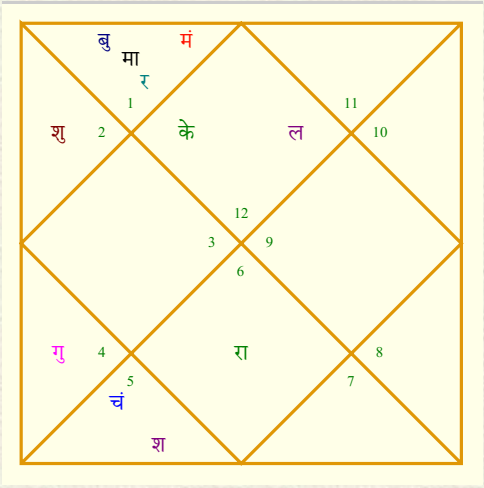

व्दादशांश[D12]

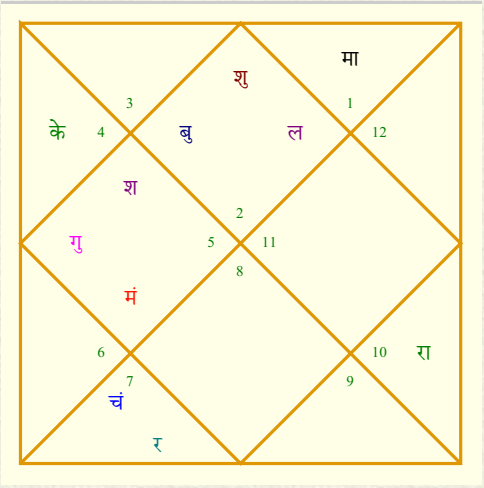

सोडशांश[D16]

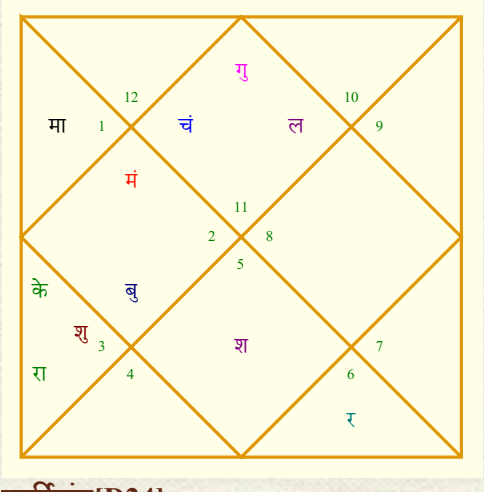

विशान्ष[D20]

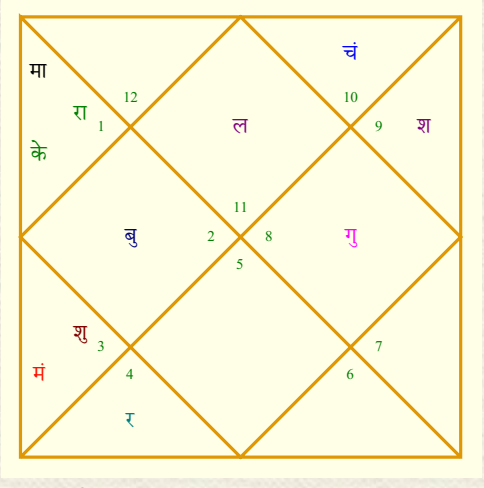

चतुर्विंशांश[D24]

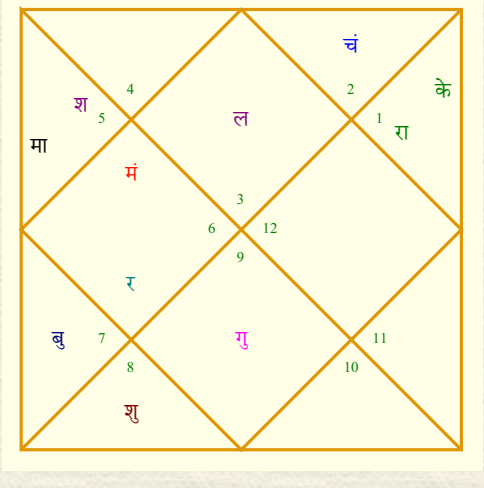

भम्श[D27]

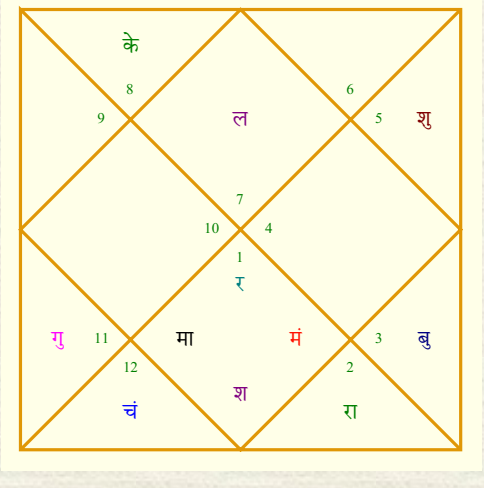

त्रिंशांश[D30]

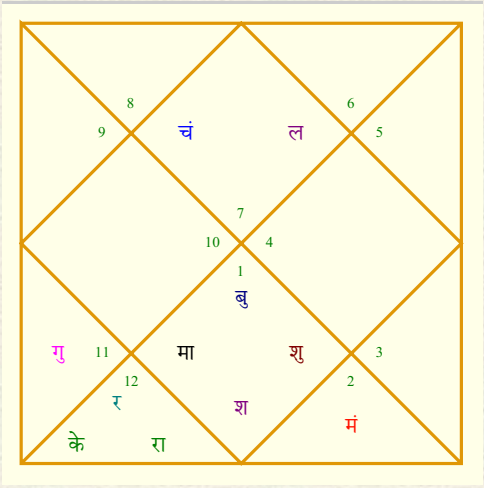

खवेदांश[D40]

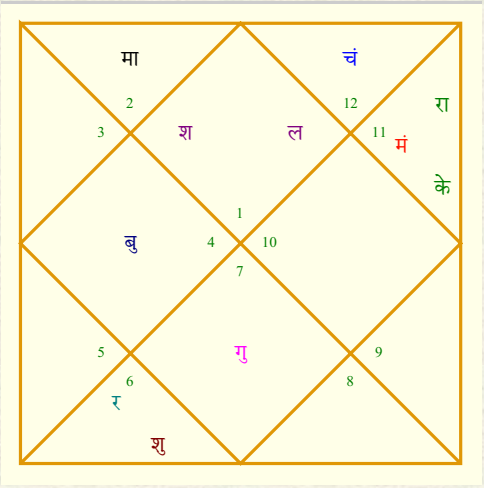

अक्षवेदांश[D45]

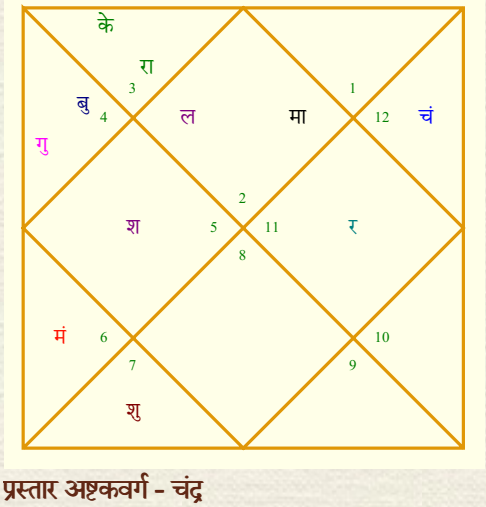

शष्टियांश[D60]

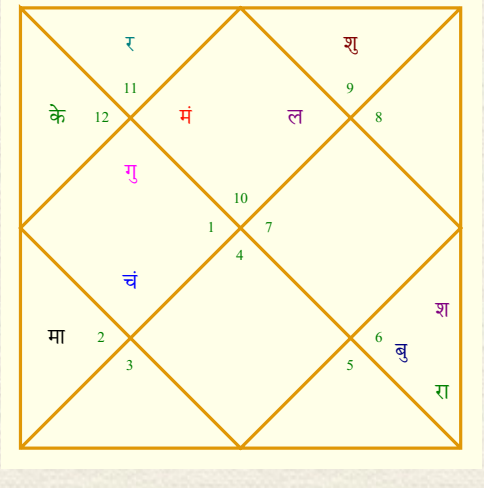

प्रस्तार अष्टकवर्ग - चंद्र

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष			1		1	1		1	4
वृषभ	1	1			1	1			4
मिथुन	1		1	1		1	1		5
कर्क			1	1					2
सिंह		1	1	1	1			1	5
कन्या	1	1			1	1			4
तुला	1	1	1	1			1		5
वृश्चिक			1		1			1	3
धनु	1	1		1	1	1	1		6
मकर		1	1	1		1	1		5
कुंभ	1		1	1					3
मीन					1	1		1	3
कुल	6	6	8	7	7	7	4	4	49

प्रस्तार अष्टकवर्ग - सूर्य

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष		1			1	1	1	1	5
वृषभ	1				1		1	1	4
मिथुन		1	1				1		3
कर्क					1				1
सिंह			1		1		1	1	4
कन्या	1	1	1	1			1	1	6
तुला	1	1		1	1	1			5
वृश्चिक		1				1	1	1	4
धनु		1	1						2
मकर		1	1		1				3
कुंभ	1		1		1	1	1		5
मीन		1	1	1	1		1	1	6
कुल	4	8	7	3	8	4	8	6	48

प्रस्तार अष्टकवर्ग - बुध

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष			1	1	1	1	1	1	6
वृषभ	1			1	1	1	1		5
मिथुन			1	1			1	1	4
कर्क	1	1		1	1			1	5
सिंह		1	1	1	1		1		5
कन्या	1		1				1	1	4
तुला	1				1				2
वृश्चिक		1		1		1	1	1	5
धनु			1	1					2
मकर	1	1	1		1	1		1	6
कुंभ		1	1	1	1		1		5
मीन	1		1		1		1	1	5
कुल	6	5	8	8	8	4	8	7	54

प्रस्तार अष्टकवर्ग - शुक्र

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष	1			1		1	1	1	5
वृषभ				1	1		1		3
मिथुन			1	1	1		1	1	5
कर्क	1			1				1	3
सिंह	1		1	1				1	4
कन्या			1		1			1	3
तुला	1	1				1	1	1	5
वृश्चिक	1			1	1		1		4
धनु	1		1	1	1		1		5
मकर	1	1		1		1		1	5
कुंभ	1	1	1	1		1		1	6
मीन	1				1	1	1		4
कुल	9	3	5	9	6	5	7	8	52

प्रस्तार अष्टकवर्ग - मंगल

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष					1	1	1	1	4
वृषभ	1	1			1	1	1		5
मिथुन			1				1	1	3
कर्क		1			1				2
सिंह		1	1		1		1	1	5
कन्या			1	1					2
तुला	1				1				2
वृश्चिक				1		1	1	1	4
धनु		1							1
मकर		1			1				2
कुंभ	1		1	1	1		1		5
मीन				1		1	1	1	4
कुल	3	5	4	4	7	4	7	5	39

प्रस्तार अष्टकवर्ग - गुरु

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष	1	1	1		1	1		1	6
वृषभ		1	1	1	1				4
मिथुन	1	1				1		1	4
कर्क			1		1	1	1	1	5
सिंह	1		1	1	1	1			5
कन्या		1	1	1		1		1	5
तुला	1	1			1		1	1	5
वृश्चिक		1						1	2
धनु		1	1	1		1	1	1	6
मकर	1	1	1	1	1	1	1		7
कुंभ			1	1	1			1	4
मीन		1				1		1	3
कुल	5	9	8	6	7	8	4	9	56

प्रस्तार अष्टकवर्ग - शनी

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष		1			1	1		1	4
वृषभ	1				1	1			3
मिथुन		1			1		1	1	4
कर्क									0
सिंह								1	1
कन्या		1	1	1	1			1	5
तुला	1	1				1	1		4
वृश्चिक			1		1	1		1	4
धनु		1	1		1		1		4
मकर		1	1				1		3
कुंभ	1		1	1					3
मीन		1	1	1				1	4
कुल	3	7	6	3	6	4	4	6	39

अष्टकवर्ग

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	कुल
मेष	4	5	6	5	4	6	4	34
वृषभ	4	4	5	3	5	4	3	28
मिथुन	5	3	4	5	3	4	4	28
कर्क	2	1	5	3	2	5	0	18
सिंह	5	4	5	4	5	5	1	29
कन्या	4	6	4	3	2	5	5	29
तुला	5	5	2	5	2	5	4	28
वृश्चिक	3	4	5	4	4	2	4	26
धनु	6	2	2	5	1	6	4	26
मकर	5	3	6	5	2	7	3	31
कुंभ	3	5	5	6	5	4	3	31
मीन	3	6	5	4	4	3	4	29
	49	48	54	52	39	56	39	337

अष्टकवर्ग कुंडलियाँ

चंद्र अष्टकवर्ग 49

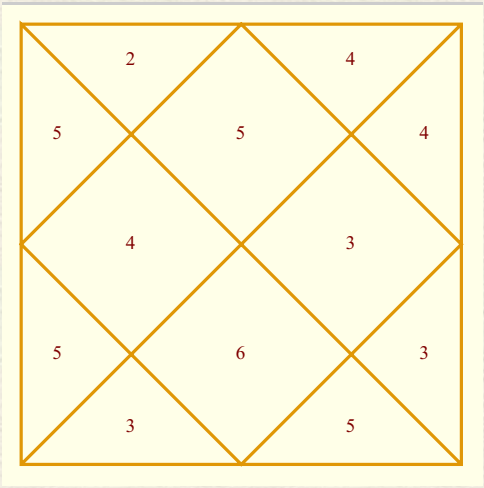

सूर्य अष्टकवर्ग 48

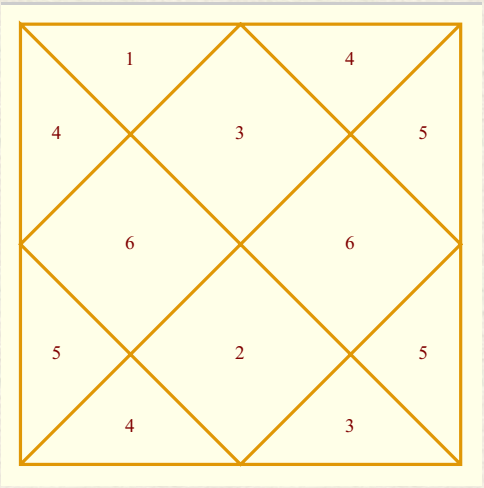

बुध अष्टकवर्ग 54

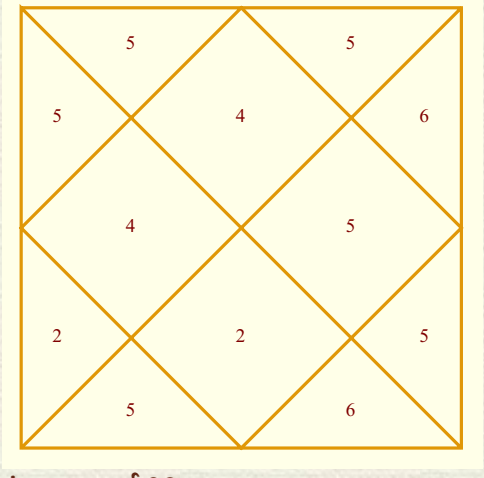

शुक्र अष्टकवर्ग 52

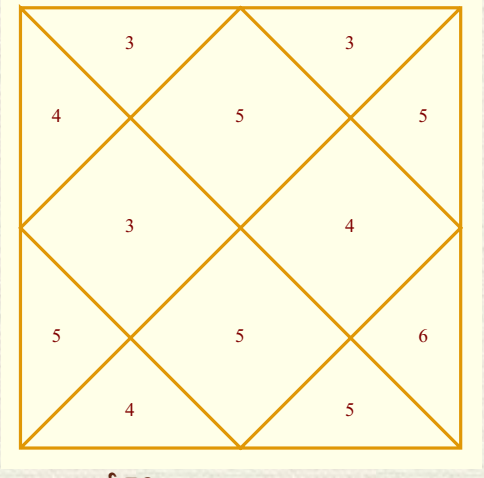

मंगल अष्टकवर्ग 39

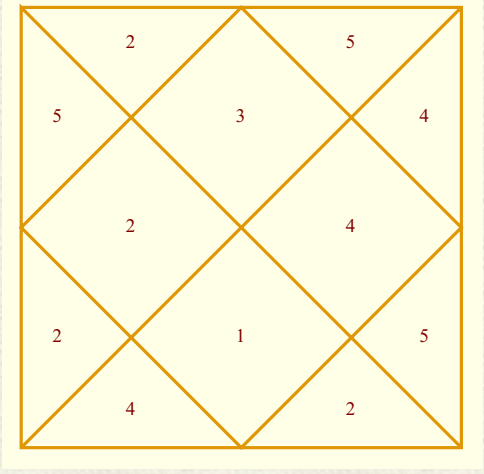

गुरु अष्टकवर्ग 56

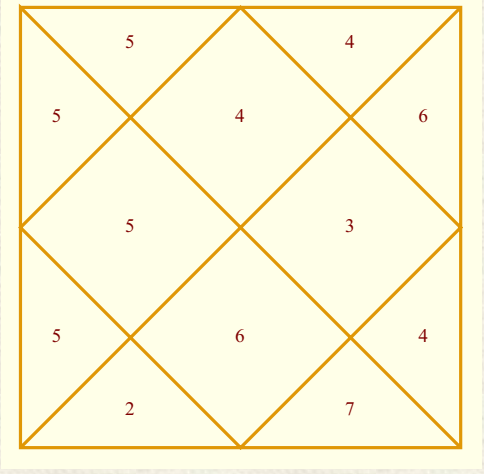

शनी अष्टकवर्ग 39

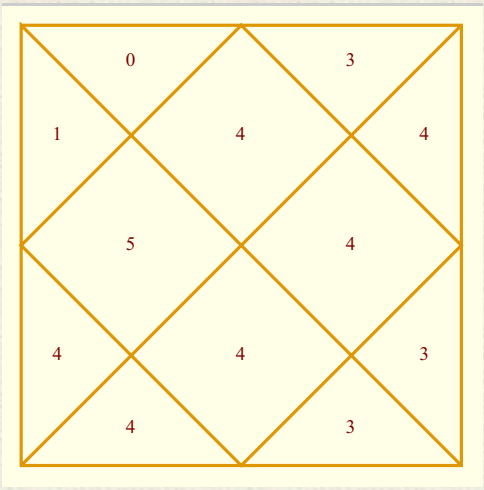

सर्व अष्टकवर्ग 337

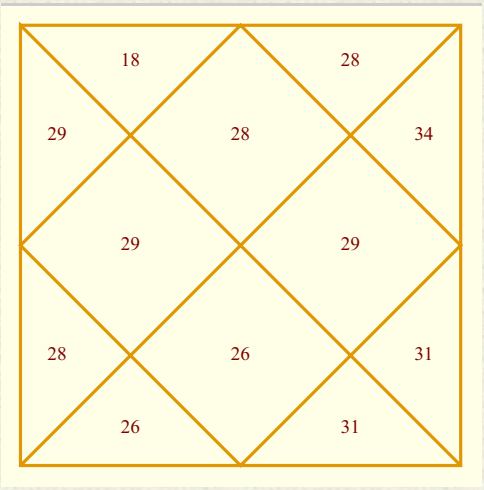

अष्टकवर्ग - त्रिकोण र्हास

चंद्र अष्टकवर्ग 10

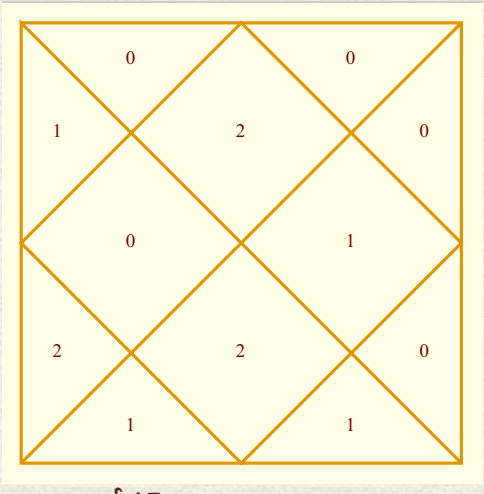

सूर्य अष्टकवर्ग 21

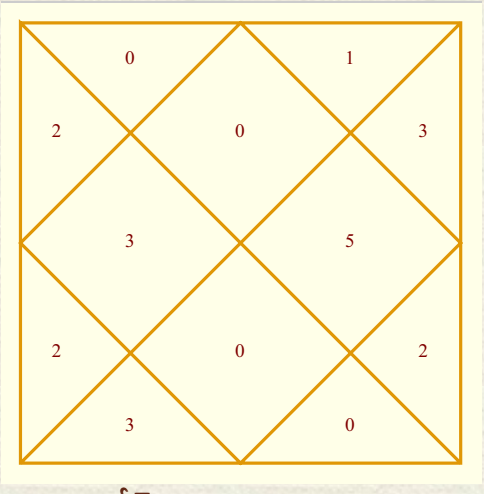

बुध अष्टकवर्ग 15

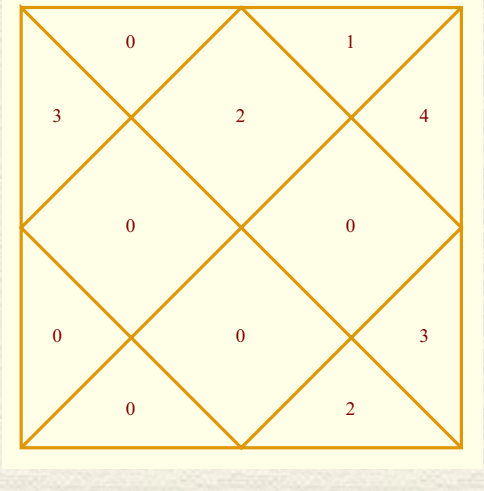

शुक्र अष्टकवर्ग 7

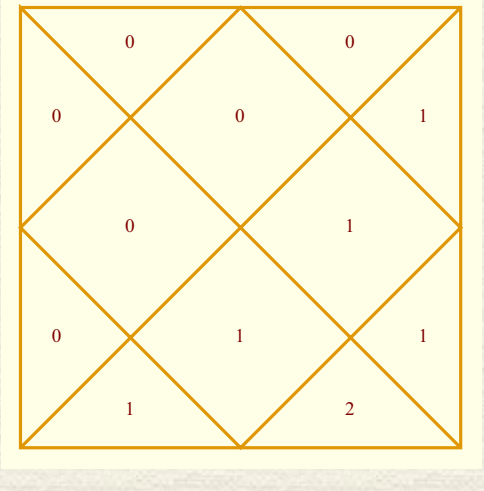

मंगल अष्टकवर्ग 18

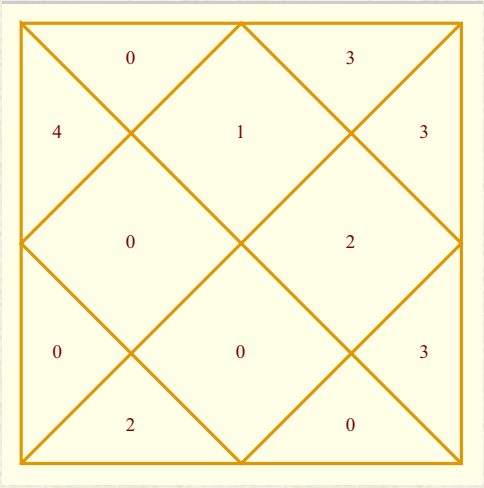

गुरु अष्टकवर्ग 11

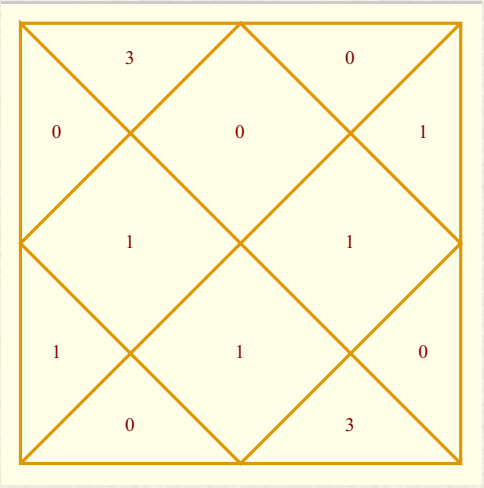

शनी अष्टकवर्ग 18

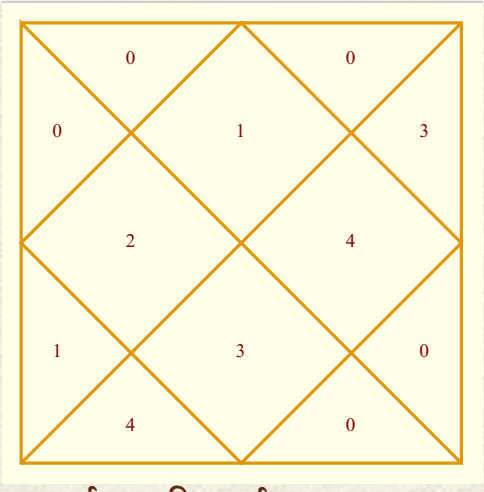

सर्व अष्टकवर्ग 100

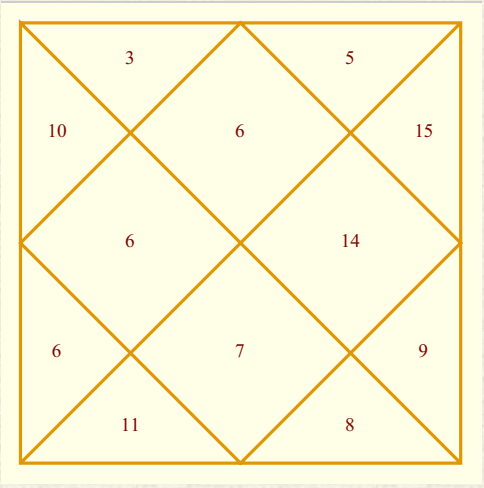

अष्टकवर्ग - एकाधिपत्य र्हास

चंद्र अष्टकवर्ग 10

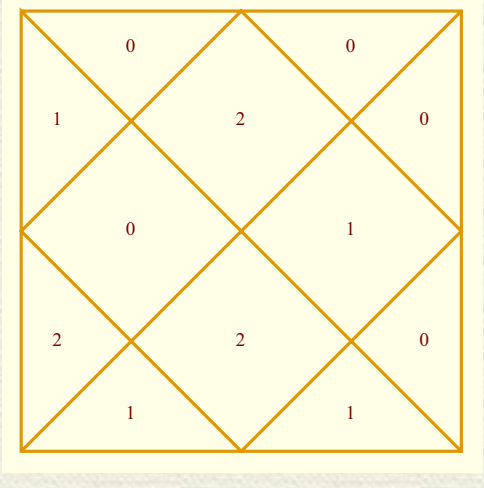

सूर्य अष्टकवर्ग 17

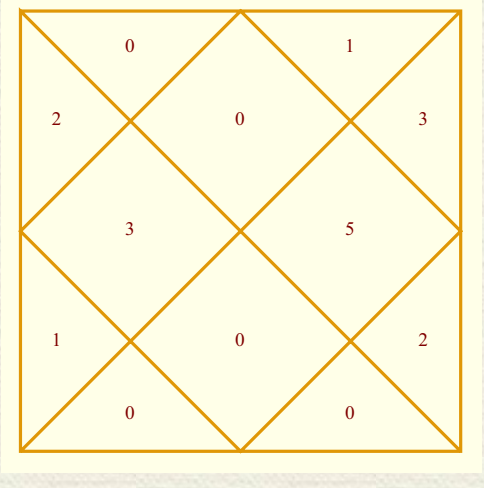

बुध अष्टकवर्ग 14

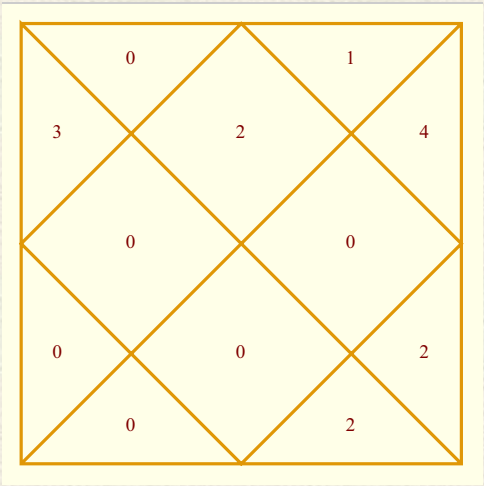

शुक्र अष्टकवर्ग 5

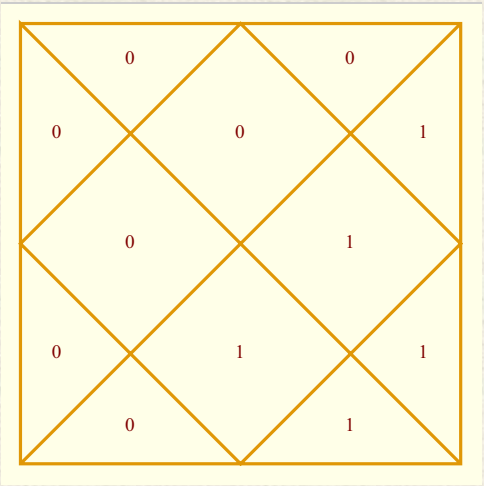

मंगल अष्टकवर्ग 16

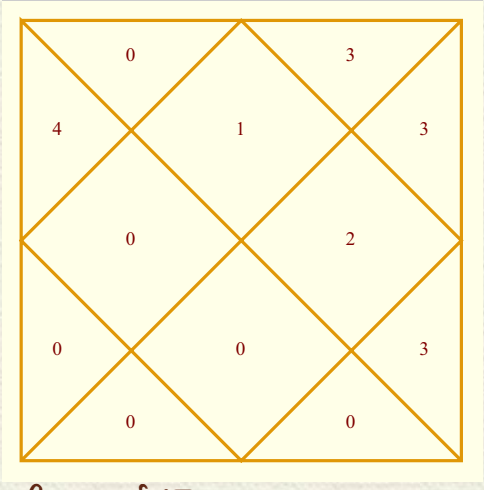

गुरू अष्टकवर्ग 11

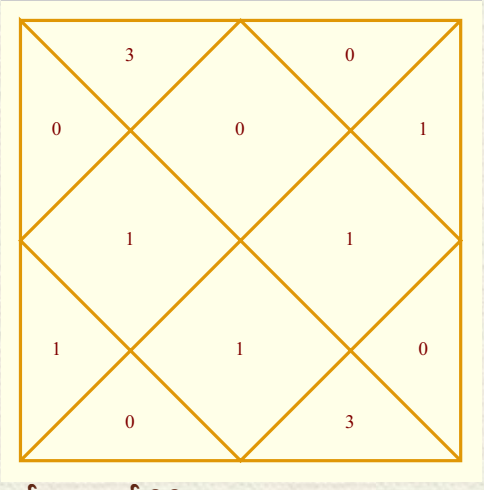

शनी अष्टकवर्ग 17

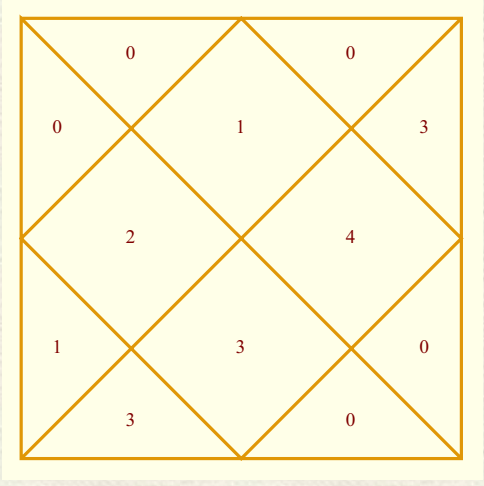

सर्व अष्टकवर्ग 90

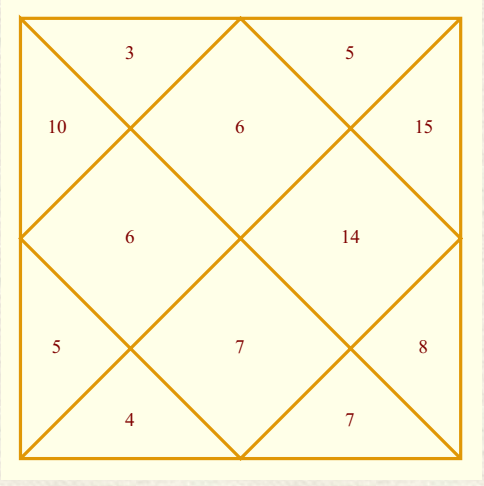

विंषोत्तरी दशा का संक्षिप्त विवरण

दशा आरम्भ की आयु (वर्ष: मास: दिवस)(YY:MM:DD)

सूर्य > 00:03:14 चंद्र > 06:03:13 मंगल > 16:03:14 राहु > 23:03:14 गुरू >41:03:14 शनी > 57:03:14 बुध > 76:03:14 केतु > 93:03:14

दशा और भुक्ती का विवरण काल(साल = 365.25 दिन)

जन्म के समय दशा का भोग्य काल = शुक्र 0 साल, 3 मास, 13 दिन

दशा	भुक्ती	आरंभ	अन्त्य
शुक्र	केतू	01-04-1978	15-07-1978
सूर्य	सूर्य	15-07-1978	02-11-1978
सूर्य	चन्द्र	02-11-1978	03-05-1979
सूर्य	मंगल	03-05-1979	08-09-1979
सूर्य	राह्	08-09-1979	02-08-1980
सूर्य	गुरू	02-08-1980	21-05-1981
सूर्य	शनि	21-05-1981	03-05-1982
सूर्य	बुध	03-05-1982	09-03-1983
सूर्य	केतू	09-03-1983	15-07-1983
सूर्य	शुक्र	15-07-1983	14-07-1984
चन्द्र	चन्द्र	14-07-1984	15-05-1985
चन्द्र	मंगल	15-05-1985	14-12-1985
चन्द्र	राह्	14-12-1985	15-06-1987
चन्द्र	गुरू	15-06-1987	14-10-1988
चन्द्र	शनि	14-10-1988	15-05-1990
चन्द्र	बुध	15-05-1990	15-10-1991
चन्द्र	केतू	15-10-1991	15-05-1992
चन्द्र	शुक्र	15-05-1992	13-01-1994
चन्द्र	सूर्य	13-01-1994	15-07-1994
मंगल	मंगल	15-07-1994	11-12-1994
मंगल	राह्	11-12-1994	30-12-1995
मंगल	गुरू	30-12-1995	05-12-1996
मंगल	शनि	05-12-1996	13-01-1998
मंगल	बुध	13-01-1998	11-01-1999
मंगल	केतू	11-01-1999	09-06-1999
मंगल	शुक्र	09-06-1999	08-08-2000
मंगल	सूर्य	08-08-2000	14-12-2000
मंगल	चन्द्र	14-12-2000	15-07-2001

राह्	राह्	15-07-2001	27-03-2004
राह्	गुरू	27-03-2004	21-08-2006
राह्	शनि	21-08-2006	26-06-2009
राह्	बुध	26-06-2009	14-01-2012
राह्	केतू	14-01-2012	31-01-2013
राह्	शुक्र	31-01-2013	01-02-2016
राह्	सूर्य	01-02-2016	26-12-2016
राह्	चन्द्र	26-12-2016	27-06-2018
राह्	मंगल	27-06-2018	15-07-2019
गुरू	गुरू	15-07-2019	01-09-2021
गुरू	शनि	01-09-2021	15-03-2024
गुरू	बुध	15-03-2024	21-06-2026
गुरू	केतू	21-06-2026	28-05-2027
गुरू	शुक्र	28-05-2027	26-01-2030
गुरू	सूर्य	26-01-2030	14-11-2030
गुरू	चन्द्र	14-11-2030	15-03-2032
गुरू	मंगल	15-03-2032	19-02-2033
गुरू	राह्	19-02-2033	15-07-2035
शनि	शनि	15-07-2035	18-07-2038
शनि	बुध	18-07-2038	27-03-2041
शनि	केतू	27-03-2041	06-05-2042
शनि	शुक्र	06-05-2042	06-07-2045
शनि	सूर्य	06-07-2045	18-06-2046
शनि	चन्द्र	18-06-2046	17-01-2048
शनि	मंगल	17-01-2048	25-02-2049
शनि	राह्	25-02-2049	02-01-2052
शनि	गुरू	02-01-2052	15-07-2054
बुध	बुध	15-07-2054	11-12-2056
बुध	केतू	11-12-2056	08-12-2057
बुध	शुक्र	08-12-2057	08-10-2060
बुध	सूर्य	08-10-2060	14-08-2061

बुध	चन्द्र	14-08-2061	14-01-2063
बुध	मंगल	14-01-2063	11-01-2064
बुध	राह्	11-01-2064	30-07-2066
बुध	गुरू	30-07-2066	04-11-2068
बुध	शनि	04-11-2068	15-07-2071
केतू	केतू	15-07-2071	11-12-2071
केतू	शुक्र	11-12-2071	10-02-2073
केतू	सूर्य	10-02-2073	17-06-2073

नीचे खिंची गई रेखा, आपके आयुष्य को बताने वाली रेखा नही है।

प्रत्यंतर दशा

दशा : गुरु अपहार : शनी

1.श	01-09-2021 >> 26-01-2022	2.बु	26-01-2022 >> 06-06-2022
3.के	06-06-2022 >> 30-07-2022	4.शु	30-07-2022 >> 31-12-2022
5.र	31-12-2022 >> 15-02-2023	6.चं	15-02-2023 >> 04-05-2023
7.मं	04-05-2023 >> 27-06-2023	8.रा	27-06-2023 >> 12-11-2023
9.गु	12-11-2023>> 15-03-2024		

दशा : गुरु अपहार : बुध

1.बु	15-03-2024 >> 10-07-2024	2.के	10-07-2024 >> 27-08-2024
3.शु	27-08-2024 >> 12-01-2025	4.र	12-01-2025 >> 23-02-2025
5.चं	23-02-2025 >> 03-05-2025	6.मं	03-05-2025 >> 20-06-2025
7.रा	20-06-2025 >> 22-10-2025	8.गु	22-10-2025 >> 10-02-2026
9.श	10-02-2026>> 21-06-2026		

दशा : गुरु अपहार : केतु

1.के	21-06-2026 >> 11-07-2026	2.शु	11-07-2026 >> 05-09-2026
3.र	05-09-2026 >> 22-09-2026	4.चं	22-09-2026 >> 21-10-2026
5.मं	21-10-2026 >> 10-11-2026	6.रा	10-11-2026 >> 31-12-2026
7.गु	31-12-2026 >> 14-02-2027	8.श	14-02-2027 >> 09-04-2027
9.बु	09-04-2027>> 28-05-2027		

दशा : गुरु अपहार : शुक्र

1.शु	28-05-2027 >> 06-11-2027	2.र	06-11-2027 >> 25-12-2027
3.चं	25-12-2027 >> 15-03-2028	4.मं	15-03-2028 >> 11-05-2028
5.रा	11-05-2028 >> 04-10-2028	6.गु	04-10-2028 >> 11-02-2029
7.श	11-02-2029 >> 15-07-2029	8.बु	15-07-2029 >> 30-11-2029
9.के	30-11-2029>> 26-01-2030		

दशा : गुरु अपहार : सूर्य

1.र	26-01-2030 >> 09-02-2030	2.चं	09-02-2030 >> 05-03-2030
3.मं	05-03-2030 >> 23-03-2030	4.रा	23-03-2030 >> 05-05-2030
5.गु	05-05-2030 >> 13-06-2030	6.श	13-06-2030 >> 30-07-2030
7.बु	30-07-2030 >> 09-09-2030	8.के	09-09-2030 >> 26-09-2030
9.शु	26-09-2030>> 14-11-2030		

दशा : गुरु अपहार : चंद्र

1.चं	14-11-2030 >> 24-12-2030	2.मं	24-12-2030 >> 22-01-2031
3.रा	22-01-2031 >> 05-04-2031	4.गु	05-04-2031 >> 09-06-2031
5.श	09-06-2031 >> 25-08-2031	6.बु	25-08-2031 >> 02-11-2031
7.के	02-11-2031 >> 30-11-2031	8.शु	30-11-2031 >> 19-02-2032
9.र	19-02-2032>> 15-03-2032		

दशा : गुरु अपहार : मंगल

1.मं	15-03-2032 >> 04-04-2032	2.रा	04-04-2032 >> 25-05-2032
3.गु	25-05-2032 >> 09-07-2032	4.श	09-07-2032 >> 01-09-2032
5.बु	01-09-2032 >> 19-10-2032	6.के	19-10-2032 >> 08-11-2032
7.शु	08-11-2032 >> 04-01-2033	8.र	04-01-2033 >> 21-01-2033
9.चं	21-01-2033>> 19-02-2033		

दशा : गुरु अपहार : राहु

1.रा	19-02-2033 >> 30-06-2033	2.गु	30-06-2033 >> 25-10-2033
3.श	25-10-2033 >> 13-03-2034	4.बु	13-03-2034 >> 15-07-2034
5.के	15-07-2034 >> 04-09-2034	6.शु	04-09-2034 >> 28-01-2035
7.र	28-01-2035 >> 13-03-2035	8.चं	13-03-2035 >> 25-05-2035
9.मं	25-05-2035>> 15-07-2035		

दशा : शनी अपहार : शनी

1.श	15-07-2035 >> 05-01-2036	2.बु	05-01-2036 >> 09-06-2036
3.के	09-06-2036 >> 12-08-2036	4.शु	12-08-2036 >> 11-02-2037
5.र	11-02-2037 >> 07-04-2037	6.चं	07-04-2037 >> 08-07-2037
7.मं	08-07-2037 >> 10-09-2037	8.रा	10-09-2037 >> 22-02-2038
9.गु	22-02-2038>> 18-07-2038		

दशा : शनी अपहार : बुध

1.बु	18-07-2038 >> 04-12-2038	2.के	04-12-2038 >> 31-01-2039
3.शु	31-01-2039 >> 14-07-2039	4.र	14-07-2039 >> 01-09-2039
5.चं	01-09-2039 >> 22-11-2039	6.मं	22-11-2039 >> 18-01-2040
7.रा	18-01-2040 >> 13-06-2040	8.गु	13-06-2040 >> 22-10-2040
9.श	22-10-2040>> 27-03-2041		

दशा : शनी अपहार : केतु

1.के	27-03-2041 >> 20-04-2041	2.शु	20-04-2041 >> 26-06-2041
3.र	26-06-2041 >> 16-07-2041	4.चं	16-07-2041 >> 19-08-2041
5.मं	19-08-2041 >> 12-09-2041	6.रा	12-09-2041 >> 12-11-2041
7.गु	12-11-2041 >> 05-01-2042	8.श	05-01-2042 >> 10-03-2042
9.बु	10-03-2042>> 06-05-2042		

दशा : शनी अपहार : शुक्र

1.शु	06-05-2042 >> 15-11-2042	2.र	15-11-2042 >> 12-01-2043
3.चं	12-01-2043 >> 18-04-2043	4.मं	18-04-2043 >> 24-06-2043
5.रा	24-06-2043 >> 15-12-2043	6.गु	15-12-2043 >> 17-05-2044
7.श	17-05-2044 >> 16-11-2044	8.बु	16-11-2044 >> 29-04-2045
9.के	29-04-2045>> 06-07-2045		

दशा : शनी अपहार : सूर्य

1.र	06-07-2045 >> 23-07-2045	2.चं	23-07-2045 >> 21-08-2045
3.मं	21-08-2045 >> 10-09-2045	4.रा	10-09-2045 >> 01-11-2045
5.गु	01-11-2045 >> 17-12-2045	6.श	17-12-2045 >> 10-02-2046
7.बु	10-02-2046 >> 01-04-2046	8.के	01-04-2046 >> 21-04-2046
9.शु	21-04-2046>> 18-06-2046		

दशा : शनी अपहार : चंद्र

1.चं	18-06-2046 >> 05-08-2046	2.मं	05-08-2046 >> 08-09-2046
3.रा	08-09-2046 >> 03-12-2046	4.गु	03-12-2046 >> 18-02-2047
5.श	18-02-2047 >> 21-05-2047	6.बु	21-05-2047 >> 11-08-2047
7.के	11-08-2047 >> 14-09-2047	8.शु	14-09-2047 >> 19-12-2047
9.र	19-12-2047>> 17-01-2048		

ग्रहों के स्थिती का विश्लेषण

भावों के स्वामी

प्रथम	भाव के स्वामी	(केन्द्र)	:	बुध
दूसरा	,,	(पनफर)	:	चंद्र
तिसरा	,,	(अपोक्लीम)	:	सूर्य
चौथा	,,	(केन्द्र)	:	बुध
पांचवा	,,	(त्रिकोण)	:	शुक्र
छठ्ठा	,,	(अपोक्लीम)	:	मंगल
सातवाँ	,,	(केन्द्र)	:	गुरू
आठवाँ	,,	(पनफर)	:	शनी
नवम	,,	(त्रिकोण)	:	शनी
दशम	,,	(केन्द्र)	:	गुरू
ग्यारहवां	,,	(पनफर)	:	मंगल
बारहवाँ	,,	(अपोक्लीम)	:	शुक्र

ग्रहों का योग

सूर्य	ग्रहों की परस्पर दृष्टी	केतु
बुध	ग्रहों की परस्पर दृष्टी	शुक्र
शुक्र	ग्रहों की परस्पर दृष्टी	बुध
गुरू	ग्रहों की परस्पर दृष्टी	लग्न

ग्रहों की भावों पर दुष्टि

चंद्र	दृष्टी	गुरू,लग्न
सूर्य	दृष्टी	राहु
गुरू	दृष्टी	चंद्र

स्थान बल का विश्लेषण

चंद्र	दृष्टी	प्रथम
सूर्य	दृष्टी	चौथा
बुध	दृष्टी	पांचवा
शुक्र	दृष्टी	पांचवा
मंगल	दृष्टी	पांचवा,आठवाँ,नवम
गुरू	दृष्टी	पांचवा,सातवाँ,नवम
शनी	दृष्टी	पांचवा,नवम,बारहवाँ

शुभ और अशुभ ग्रह

गुरु, शुक्र और चन्द्र नैसर्गिक पक्षबल के अनुसार शुभ फलदायी होते हैं।.शुक्लपक्ष के शष्ठी तिथि से लेकर कृष्णपक्ष के शष्ठी तिथि तक चन्द्र को पक्षबल प्राप्त रहता है।

आपकी जन्मपत्रिका में चन्द्र पक्षबल हीन है और अशुभ फल उत्पन्न करनेवाला है।

बुध जब क्रूर (अशुभ) ग्रहों के संयोग में आता है तो वह ओर भी अशुभ और उद्वेग उत्पन्न करने वाला ग्रह हो जाता है।

लेकिन आपकी कुंडली में बुध अशुभ ग्रहों के प्रभाव में नहीं है।

चंद्र	अशुभ
सूर्य	अशुभ
बुध	शुभ
शुक्र	शुभ
मंगल	अशुभ
गुरु	शुभ
शनी	अशुभ
राहु	अशुभ
केतु	अशुभ

अशुभ और शुभ फलों का ग्रहों के भाव अधिपत्य के आधार पर निरूपण

ग्रहों के शुभ-अशुभ फलों का निर्णय कुंडली में उनके नैसर्गिक गुणों के आधार पर किया जाता है पर फलादेश का मुख्य आधार उनका कुंडली के भावों के अधिपत्य के अनुसार होता है।

कुंडली में प्रथम स्थान, पांचवा स्थान और नवमाँ स्थान सदा शुभ माना जाता है। इन्हें त्रिकोण भी कहा जाता है।

नैसर्गिक अशुभ ग्रह भी यदि चौथे, सातवें और दसवें स्थान के स्वामीत्व को प्राप्त करता है, तब वह लाभदायी और मंगलकारी बनता है।

तीसरे, छठ्ठे और अग्यारवें स्थान के स्वामी अशुभ और अमंगलकारी माने जाते हैं।

साधारण दृष्टी से शुभ ग्रह चौथे, सातवें और दसवें स्थान के सेवामीत्व को प्राप्त करते है, तब वह अशुभकारी और अमंगलमयी बनते हैं। यह केन्द्राधीपती के दोष के कारण उत्पन्न होनेवाली स्थिती हैं।

दूसरे, आठवें और बारहवें, स्थान के स्वामी सम या शुभ-अशुभ दोनों ही प्रकार के फल देने वाले होते हैं।

सूर्य और चन्द्र के छोडकर अन्य सभी ग्रह, कुंडली में दो स्थानों के स्वामीत्व को प्राप्त करते हैं। उनके भावानुसार प्रभाव को सूक्ष्मता से देखना पडता है।

कुछ ज्योतिषों का मानना है कि आठवें स्थान का स्वामी सदा अमंगल और अशुभ प्रभाव उत्पन्न करने वाला होता है। शास्त्रोक्त ग्रंन्थों से पता चलता है कि आठवे स्थान के स्वामी के विषय में फलादेश उसके कुंडली में अन्य स्थान को भी विचार में लेकर करना चाहिए।

ग्रह	स्वामीत्व	स्वभाव
चंद्र	2	सम
सूर्य	3	अशुभ
बुध	1 4	सम
शुक्र	5 12	शुभ
मंगल	6 11	अशुभ
गुरु	7 10	अशुभ
शनी	8 9	अशुभ

नैसर्गिक मित्रता कोष्टक

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	मित्र	मित्र	सम	सम	सम	सम
र	मित्र	...	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
बु	शत्रु	मित्र	...	मित्र	सम	सम	सम
शु	शत्रु	शत्रु	मित्र	...	सम	सम	मित्र
मं	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	...	मित्र	सम
गु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	...	सम
श	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	...

तात्कालिक मित्रता कोष्टक

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
र	मित्र	...	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
बु	शत्रु	मित्र	...	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
शु	शत्रु	मित्र	शत्रु	...	मित्र	मित्र	शत्रु
मं	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	...	मित्र	मित्र
गु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	...	मित्र
श	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	...

पंचदा मित्रता कोष्टक

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	अधि मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
र	अधि मित्र	...	मित्र	सम	सम	अधि मित्र	अधि शत्रू
बु	अधि शत्रू	अधि मित्र	...	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
शु	अधि शत्रू	सम	सम	...	मित्र	मित्र	सम
मं	सम	सम	सम	मित्र	...	अधि मित्र	मित्र
गु	सम	अधि मित्र	सम	सम	अधि मित्र	...	मित्र
श	अधि शत्रू	अधि शत्रू	सम	सम	सम	मित्र	...

षष्टीयांश में के दृष्टीबल कोष्टक

देखने वाला ग्रह दृष्य ग्रह

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
शुभ दृष्टी							
बुध	18.05	.	.	.	44.57	17.48	30.98
शुक्र	19.01	.	.	.	43.94	15.55	31.94
गुरू	49.28	8.70	1.24	0.28	.	.	12.78
शुभ बल	86.34	8.70	1.24	0.28	88.51	33.03	75.70
अशुभ दृष्टी							
चंद्र	.	-36.17	-41.95	-40.99	-56.52	-17.14	-42.93
सूर्य	-10.59	.	.	.	-37.11	-32.39	-17.04
मंगल	-46.08	-22.89	-15.43	-14.47	.	.	.
शनी	-4.14	-36.48	-29.02	-28.06	.	.	.
अशुभ शक्ती	-60.81	-95.54	-86.40	-83.52	-93.63	-49.53	-59.97
दृष्टी पींड	25.53	-86.84	-85.16	-83.24	-5.12	-16.50	15.73
द्रिक बल	6.38	-21.71	-21.29	-20.81	-1.28	-4.12	3.93

षड्बल

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
उच्च बल							
	17.83	52.55	5.86	57.50	8.19	50.01	33.54
सप्तवर्गीय बल							
	75.00	129.38	105.00	142.50	67.50	105.00	24.40
ओजयुग्म राशी बल							
	15.00	15.00	30.00	15.00	15.00	15.00	30.00
केन्द्र बल							
	60.00	60.00	30.00	30.00	30.00	60.00	15.00
द्रेश्काण बल							
	15.00	0	0	0	15.00	15.00	0
संयुक्तस्थान बल							
	182.83	256.93	170.86	245.00	135.69	245.01	102.94

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
संयुक्त दिगबल							
	30.38	56.67	31.65	2.29	28.06	52.47	11.00
नतोन्नत बल							
	2.46	57.54	60.00	57.54	2.46	57.54	2.46
पक्षबल							
	65.88	32.94	27.06	27.06	32.94	27.06	32.94
त्रिभाग बल							
	0	60.00	0	0	0	60.00	0
अब्द बल							
	0	15.00	0	0	0	0	0
मास बल							
	0	0	0	0	30.00	0	0
वार बल							
	0	0	0	0	0	0	45.00
होरा बल							
	60.00	0	0	0	0	0	0
आयन बल							
	57.87	71.26	42.81	43.72	56.42	59.90	12.93
युद्ध बल							
	0	0	0	0	0	0	0
संयुक्त काल बल							
	186.21	236.74	129.87	128.32	121.82	204.50	93.33
संयुक्त चेष्टाबल							
	0	0	15.67	47.67	41.48	27.52	44.52
संयुक्त नैसर्गिक बल							
	51.43	60.00	25.70	42.85	17.14	34.28	8.57
संयुक्त द्विकबल							
	6.38	-21.71	-21.29	-20.81	-1.28	-4.12	3.93
संपूर्ण षड्बल							
	457.23	588.63	352.46	445.32	342.91	559.66	264.29

षडबल संक्षिप्त सारिणी

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
संपूर्ण षड्बल						
457.23	588.63	352.46	445.32	342.91	559.66	264.29
संपूर्ण शडबल						
7.62	9.81	5.87	7.42	5.72	9.33	4.40
मौलीक आवश्यकता						
6.00	5.00	7.00	5.50	5.00	6.50	5.00
षडबल अनुपात						
1.27	1.96	0.84	1.35	1.14	1.44	0.88
संबन्धी स्थान						
4	1	7	3	5	2	6

इष्टफल, कष्टफल कोष्टक

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
इष्टफल						
21.96	42.10	9.58	52.35	18.43	37.10	38.64
कष्टफल						
37.27	13.99	48.99	5.55	30.98	18.01	20.24

षष्टीयांश में के भाव दृष्टीबल कोष्टक

बुध ग्रह फल उसके साथ स्थित ग्रह के स्वभाव से सुनिश्चित किया जाता है।

देखने वाला ग्रह भावमध्य की अपेक्षा से गृहों का दृष्यभाव

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
शुभ दृष्टी											
चंद्र											
14.86	11.11	7.36	3.61	.	.	.	0.14	4.04	11.11	7.21	0.57
बुध											
40.06	32.47	4.94	50.12	47.47	32.47	17.47	2.47	.	.	.	12.53
शुक्र											
9.53	8.36	1.72	11.57	12.11	8.36	4.61	0.86	.	.	.	2.89
गुरू											
.	11.29	37.58	33.71	7.42	45.16	48.71	33.71	18.71	3.71	.	.
				30.00				30.00			
शुभ बल											
64.45	63.23	51.60	99.01	97.00	85.99	70.79	37.18	52.75	14.82	7.21	15.99

अशुभ दृष्टी

सूर्य											
-10.00	-5.01	-4.99	-13.75	-10.00	-6.25	-2.50	.	.	.	-1.25	-6.25
मंगल											
.	.	-3.02	-9.80	-8.23	-1.45	-12.10	-11.98	-8.23	-4.48	-0.73	.
				-3.75				-3.75			
शनी											
.	.	.	-3.38	-10.50	-7.87	-0.75	-13.51	-11.62	-7.87	-4.12	-0.37
				-11.25							-11.25
अशुभ शक्ती											
-10.00	-5.01	-8.01	-26.93	-43.73	-15.57	-15.35	-25.49	-23.60	-12.35	-6.10	-17.87

दृष्टी पींड / द्रिक बल

54.45	58.22	43.59	72.08	53.27	70.42	55.44	11.69	29.15	2.47	1.11	-1.88

भावबल की तालिका

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधीपती का बल											
352.46	457.23	588.63	352.46	445.32	342.91	559.66	264.29	264.29	559.66	342.91	445.32
भाव दिग्बल											
60.00	40.00	10.00	30.00	20.00	50.00	30.00	20.00	20.00	0	50.00	40.00
भावदृष्टीबल											
54.45	58.22	43.59	72.08	53.27	70.42	55.44	11.69	29.15	2.47	1.11	-1.88
संपूर्ण भावबल											
466.91	555.45	642.22	454.54	518.59	463.33	645.10	295.98	313.44	562.13	394.02	483.44
भावबल के रूप											
7.78	9.26	10.70	7.58	8.64	7.72	10.75	4.93	5.22	9.37	6.57	8.06
संबन्धी स्थान											
7	4	2	9	5	8	1	12	11	3	10	6

अस्तंगत ग्रह स्थिती का विवरण।

जब कोई ग्रह सूर्य के निकट आता है तब वह अस्त हो जाता है। अस्त ग्रह अशुभ स्थिती उत्पन्न करता है। सूर्य से बारह अंश पर चन्द्र, सत्रह अंश पर मंगल, तेरह अंश पर बुध, ग्यारह अंश से गुरू, नौ अंश पर शुक्र और पंद्रह अंश पर शनी अस्तंगत माना जाता है।

इस जन्मकुंडली में कोई भी ग्रह अस्त नही है।

ग्रहयुद्ध

सूर्य और चन्द्र के सिवा अन्य ग्रह जब भी एक अंश से ज्यादा समीप आते हैं तो 'ग्रहयुद्ध' की स्थिती पैदा होती है। ग्रहयुद्ध में शुभाशुभ के बारे में अलग-अलग विचार धारायें हैं। उसकी एक झलक इस प्रकार है। अन्य ग्रहों के लिए : उत्तर दिशा की ओर रहे ग्रह विजयी होते हैं।

इस जन्मकुंडली में कोई भी ग्रहयुद्ध नहीं है।

अवस्था, क्षीण, अस्त, युद्ध और वक्र स्थिती का संक्षिप्त विवरण।

ग्रह	उच्च राशि में/ नीच राशि में	अन्स्तंगत	ग्रहयुद्ध	वक्री	बालादि अवस्था
चं					मित्रावस्था
र					युवावस्था
बु					बालावस्था
शु					बालावस्था
मं	नीच का				मित्रावस्था
गु					बालावस्था
श				वक्री	बालावस्था

कुंडली में ग्रहों की विशिष्ट युति योग

जन्म कुंडली में ग्रहों के मुख्य प्रकार के संयोजन से उत्पन्न होने वाली स्थिति को योग कहते हैं। योग व्यक्ति के जीवन प्रवाह और भविष्य को असर करने वाला होता हैं। कुछ योग

ग्रहों के साधारण मिलने या संयोजन से उत्पन्न होते हैं, लेकिन विशेष दूसरे योग जो हैं वह ग्रहों के कुछ खास प्रकार के संयोजन अथवा जन्मकुंडली में स्थान ग्रहण करने से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार के सैकडों मिलन, संयोजन योग इत्यादी के विवरण पुरातन ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों में दिये गये हैं। कुछ संयोजन से उत्पन्न होने वाले योग लाभदायी रहते हैं तो कुछ से हानि अथवा अशुभकारी फलों की प्राप्ति होती हैं।

आपकी जन्म पत्रिका में कुछ मुख्य महत्वपूर्ण ग्रहों से उत्पन्न होनेवाले योगों का विवरण यहां दिया गया हैं।

नीचभंगराज योग

लक्षण:
मंगल क्षीण और बलहीन स्थिती उत्पन्न हुई है।
दुर्बल भाव का अधिपति लग्न से केन्द्र में हैं।
दुर्बल राशी में जो ग्रह उच्च का है, वह चन्द्र से केन्द्र में उपस्थित है।
दुर्बल राशी में जो ग्रह आनन्दपूर्ण है, लग्न से केन्द्र में उपस्थित है।

आप अति भाग्यवान होंगे और श्रेष्ठ उच्च स्थान प्राप्त करेंगे। आप के व्यवहार में न्याय और नीति की झलक प्राप्त होगी।

राजयोग

लक्षण:
प्रथम और पांचवा भाव के अधिपति एक दूसरे की दृष्टि में है।
चौथा और पांचवा भाव के अधिपति एक दूसरे की दृष्टि में है।
इस जन्मकुण्डली में लाभदायक राजयोग दिखाई देती है।

कुंडली में वृहत राजयोग उदित है,

गज़केसरी योग

लक्षण:
चन्द्र एवं गुरू का केन्द्र योग

बृहस्पति चन्द्र से केन्द्र स्थान पर होने से गजकेसरी योग होता है। ज्योतिशास्त्र के अनुसार केसरीयोग में जन्म पानेवाले व्यक्ति भाग्यवान माने जाते हैं। वे धनी, ऐश्वर्यवान, विजयी होते हैं। केसरी योग अन्य बुरे योगों का प्रभाव, जैसे केमद्रुम, शटक आदि को नष्ट करता है। आप सामान्यत: एक दीर्घ सफल जीवन प्राप्त कर सकते हैं। आपका मन दृढ होने पर भी कभी-कभी चंचल भी होता है। एक बार लिये गये निर्णय को बदलना आपके लिए कठिन है। संपत्ति, कार्यसिद्धि, सफलता और प्रगति सुलभ प्रमाण में प्राप्त होगी। ऐश्वर्यपूर्ण दीर्घ आयु का योग है। स्वयं बुद्धि से हर समस्या का समाधान निकालने में निपुण हैं।

पर्वतयोग

लक्षण:
लग्नाधीपती और बारहवें स्थान का स्वामी एकसाथ केन्द्र में हैं।

आप संपत्तिवान, श्रेष्ठ व्यक्ति बनेंगे। आप धार्मिक नीति के चहेते और हास्य बिखरानेवाले और किसी संस्था के उच्चपद को सुशोभित करनेवाले व्यक्ति बनेंगे। आप भावनाप्रधान भी होंगे।

सदसन्चार योग

लक्षण:
लग्नाधीपती चर राशी में हो।

आप सदा सक्रिय और चलायमान हैं। आपके कार्य क्षेत्र में सफर ज़्यादा रहेगा। आप अपने निर्धारित लक्ष्य को सदा ध्यान में रखें ताकि आप कहीं भटक न जायें।

द्विग्रह योग

लक्षण:
दो ग्रह एक ही भाव में स्थीत है।
बुध,शुक्र, ग्यारहवां भाव में है।

धर्म और धार्मिक विषयों में आपकी विशिष्ट दिलचस्पी होगी। आप हमेशा शान्त रहने वाले व्यक्ति हैं। आप संगीत और अन्य कला का आनन्द लेने के लिए समय बिताएंगे। आप विनीत होकर बाते करने का हमेशा ध्यान रखते हैं। आपको सम्पति और समृद्धि प्राप्त होगी।

भाव फल

आपके जीवन और व्यवहार पर गृहों के प्रभाव की यह विज्ञापन समीक्षा करता है। इस विज्ञापन में उल्लेखित आवृत्ति और विरोध आपके जीवन पर गृहों के परस्पर प्रभाव को सूचित करते हैं ।

व्यक्तित्व, शारीरीक बनावट, सामाजिक स्थिति

जन्मकुण्डली का पहला भाव एक व्यक्ति के व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, सामजिक स्थिति और प्रसिद्धि को सूचित करता हैं। यह लग्न कहलाता है।

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। विषय-भोग में अति अभिरूचि रखने वाले व्यक्ति हैं। सरकारी उच्च अधिकारियों से या अन्य अफसरों से समस्या उत्पन्न होने की संभावना है। इस कारण सतर्कता से आगे बढना लाभदायी होगा। हठीली गंभीर मुख मुद्रा और वाचाल स्वभाव दूसरों के लिए आकर्षण का केन्द्र बनेगा। नृत्य और संगीत के माध्यम से प्रसन्न चित्त रहना पसंद करते हैं। जिस व्यवसाय में कष्ट, लेखन और विद्या का ज़्यादा उपयोग किया जाता है, उस व्यवसाय के साथ आपका गहरा संबन्ध बना रहेगा। इच्छानुसार स्वादिष्ट भोजन सुलभता से प्राप्त होगा। जलाशय से खतरा दिखाई देता है। इस कारण नदी, सागर, तालाब और सरोवर इत्यादि में स्नान करते वक्त सावधान रहें। स्वभाव से विनयशील होने के कारण प्रशंसा के पात्र बनेंगे। हठीले स्वभाव के कारण एकाध बार हानि या अपमान सहन करना होगा। केवल मैं ही सही हूँ, यह धारणा सदैव सही होना संभव नहीं। चर्म विकार से बचकर रहें।

सिंहराशि तीसरे स्थान पर रहने के कारण सुख बांटने वाले व्यक्ति हैं। बदचलन व्यक्तियों से सजग रहना आवश्यक है। समय के साथ साथ धन का अभिमान आपके दिमाग में जन्म लेगा। व्यवहार और विचार दोनों के माध्यम से हिंसात्मक क्रिया करने में ज़रा भी पीछे नहीं हटेंगे। ३६वें से ४२वें वर्ष के बीच जीवन में स्थायित्व आरंभ होगा।

धनु राशि सातवें स्थान पर है। इस कारण सहमित्रों से या भागीदार से मानसिक क्लेश होने की संभावना है। दूसरों की खामियोंओं को देखनेवाले और परामर्श करने की आदत वाले मित्र होंगे। उनके साथ मानसिक क्लेश होने की संभावना है। कलह प्रिय मित्रों से बचना आपके लिए आवश्यक है। जीवनसाथी और संतान का सुख उत्तम प्राप्त होगा।

आठवें स्थान में मकर राशि के होने से विद्या प्राप्ति के कार्य में सफलता प्राप्त होगी। गौरव पाने जैसे अनेक सद्गुणों के आप मालिक हैं। आप क्रियात्मक स्वभाव के हैं। सुखी और शक्तिशाली व्यक्ति हैं। शास्त्रीय ज्ञान की पूर्ण जानकारी और अनेक विषयों का ज्ञान आपको उपलब्ध होगा। उच्च श्रेणी के अफसरों से प्रीति प्राप्त होगी। विदेशी कारोबार से संबन्ध रहना संभव होगा। महँगे और सुन्दर वस्त्र परिधान के आप बड़े शौकीन हैं। स्त्री और ज़मीन के कारण खुले हातों खर्च करने के आदि हैं। साथ ही साथ अपने सुख का प्रदर्शन करना भी अच्छा लगता है। इस कारण से भी खुले हाथों से धन खर्च करने की आदत आप में पाई जायेगी।

आप चातुर्यपूर्ण कार्यों से और बुद्धिबल से धन कमाने वाले हैं। सट्टा बाज़ार आपके लिए योग्य नहीं हैं। जीवन के ४५ और ४६ वर्ष में आर्थिक नुकसान होगा। जीवन के २४,२९,३३,३५,४१,४७, ५९,६० और ६२ महत्वपूर्ण वर्ष रहेंगे।

लग्नाधिपति ग्यारहवें स्थान पर है। योग्य प्रगति के साथ संपत्ति और श्रेष्ठ व्यक्तित्व भी प्राप्त होगा। अनेक प्रकार के सुख-भोग का आस्वादन प्राप्त होगा। आप उदारचित्त और स्वाभिमानी हैं। पूरी तरह चिन्ता से मुक्त होना संभव नहीं होगा। यह ग्रह अपनी दशा में सरकारी परेशानी, विभागीय जाँच अथवा पूज्यजन को पीड़ा भी दे सकता है।

गुरु प्रथम स्थान पर रहने से सौन्दर्यपूर्ण शरीर प्राप्त होगा। विज्ञान में अति अभिरूचि प्राप्त होगी। आप निर्भय और व्यवहार से विनम्र हैं। दीर्घायुषी होने का भाग्य प्राप्त है।

चन्द्र लग्न से प्रभावित है। आप व्यापार या जल से संबंधित उद्योग क्षेत्र में सफलता पा सकते हैं।

धन, भूमि और संम्पति

भूमि, संपत्ति, धन, परिवार, बोली, भोजन आदि कुछ महत्वपूर्ण चीजे हैं जो दूसरे भाव द्वारा सूचित की जाती है। इसे धन स्थान कहते हैं।

दूसरे भावाधिपति के सातवें स्थान पर होने से आपको वेद शास्त्रों में नैपुण्यता प्राप्त होगी। परिवार के अन्य लोगों के साथ निकट के संबंध, समूह के बीच शंका-कुशंका पैदा होगी। जीवनसाथी में मनोवेदना उत्पन्न करने वाले कार्य आप से होने की संभावनाएं हैं। चिकित्सा या औषधि से संबंध रखने वाले काम लाभप्रद हो सकते हैं। माता और जीवन साथी से वैचारिक मतभेद रह सकता है।

मंगल (कुज) दूसरे स्थान पर रहने से कठिन परिश्रम भरा जीवन रहेगा। आपके क्रोधी स्वभाव से हर व्यक्ति परिचित है। इच्छानुसार अभ्यासक्रम आगे न बढा सके इस कारण बड़ा खेद रहेगा। व्यर्थ के तर्क-वितर्क करने के आदि हैं। इस कारण अन्य लोगों के बीच उद्वेगपूर्ण वातावरण का सर्जन करने के आदि भी हैं। जीवन में प्रगति करने में सफल होंगे।

ऐसा प्रतीत होता है कि गुरु की दृष्टी दूसरे स्थान के स्वामी पर है। आप पुराने ऐतिहासिक पुस्तकों को पढना पसन्द करते है और अपने ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाना चाहते हैं।

क्योंकि दूसरे स्थान का स्वामी सातवें स्थान के स्वामी की दृष्टी में है, आप अपने जीवन साथी से धन और संपत्ति पा सकते हैं।

भाई / बहन

जन्मकुण्डली का तीसरा स्थान, आपके भाई - बहन, धैर्य और बुद्धि को सूचित करता हैं।

तीसरा भावाधिपति दसवें स्थान पर रहने से अनेक सुख और भाग्योदय का योग है। स्वपरिश्रम और पुरुषार्थ आपकी सफलता का साधन होगा। आपको अधर्मी और विकार युक्त मनोदशा वाले लोगों के साथ रहकर कार्य करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। संतान, बन्धु और मित्र वर्ग के कारण थोड़ा मानसिक तनाव होगा। पर अन्ततःबन्धु वर्ग के कारण ही पद व प्रतिष्ठा बढेगी।

शनि तीसरे स्थान पर रहा है। इस कारण अपने जीवनसाथी से ज़्यादा प्रेम की अपेक्षा निराश होने का कारण बनेगी। आपके आहार-विहार तथा व्यवहार के प्रति अनेक आक्षेप होंगे। कीर्ति और संपत्ति प्रदान होगी। आप दीर्घायु जीवन बितायेंगे।

संपत्ति, विद्या इत्यादि के विषय में।

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश कारक और संबंधित ग्रहों की योग, युतिदृष्टि के माध्यम से संपत्ति विद्या-बुद्धि, माता, भूमि , भवन और वाहन आदि का सूचक है। इस पत्रिका में इस विषय का विवरण निम्नांकित है।

आपकी जन्मपत्रिका में चौथे भाव का स्वामी ग्यारहवे भाव में स्थित है। आपकी जीवन में जो प्रगति हुई है यह ईश्वर कृपा और आपकी पुरुषार्थ का फल है। आप दयाशील और नीतिवान व्यक्ति हैं। आप भाग्यवान है। आपके सौम्य शीलवान स्वभाव से लोग आकर्षित होंगे। समय आने पर आप में छिपी हुई आत्मशक्ति और कार्यशक्ति अपने आप प्रकट होगी। यह अन्य लोगों के लिए बड़ा आश्चर्यजनक होगा। अनेक दृष्टिकोण से आपकी माँ बड़ी भाग्यशाली हैं। स्वमाता तुल्य आदरणीय और भी एक महिला आपकी जीवन में प्रवेश कर पायेगी। आपका कार्यक्षेत्र ज़मीन के साथ संबन्ध रखने वाला हो तो अधिक लाभ अर्जित करना सरल होगा।

चौथे भाव का मालिक बुध है। आप समाज मध्य तत्वचिंतक के रूप में, आदर्शवादी और बुद्धिजीवी के रूप में ख्याति और सम्मान प्राप्त करेंगे। यथायोग्य प्रोत्साहन के मिलने से हर

कार्यक्षेत्र में आप प्रगति कर सकेंगे। बौद्धिक कार्यों में विशेष सफलता पाने का योग है। अतुलित कार्यशक्ति आप में छुपी हुई है। सफलता आपका साथ देती रहेगी।

राहु आपके चौथे भाव में रहने से आपका व्यवहार दूसरे लोग ठीक तरह से समझ न सकेंगे। आपके निर्णय कभी कभी उनकी दृष्टि में मूर्खतापूर्ण होंगे। हितशत्रुओं के छल से या अकारण ही कोर्ट-कचहरी के चक्कर लगाने पड़ सकते हैं। इन बातों से सावधान रहें। सच्चे मित्रों से संबन्ध रखना आप के लिए लाभदायक रहेगा। राहु दशा से आप में कार्यकुशलता जागृत होगी। परिवार और जनसमुदायक के विचारों का ठीक से अध्ययन करके समुचित कदम उठाना आप के लिए लाभदायक होगा। सौम्य और मिलनसार व्यवहार स्वाभाव से आप सुलह और मेल करवाने का काम अच्छी तरह निभा पायेंगे। मानसिक चिन्ता से बचकर रहने का प्रयत्न करना होगा।

बच्चे, बुद्धि, प्रतिभा

जन्मकुण्डली में उपस्थित पाँचवी भाव संतान, शिक्षा, मन और बुद्धि को सूचित करता है।

पाँचवां भावाधिपति ग्यारहवें स्थान पर रहने से विद्या विषयक कार्यों से प्राप्त हुआ ज्ञान और स्वानुभव आप पुस्तिका के रूप में अन्य को समर्पित करके श्रेष्ठ कार्य करने की संभावना रखते हैं। धन और निपुणता आप की भविष्य की पीढ़ी को निश्चित प्राप्त होगी। 'ग्रंथकर्ता महादक्षो बहुपुत्र धनान्वित: ॥'

लग्न से पाँचवे भाव में शुभ ग्रहों की उपस्थिति चन्द्र, गुरू था शुभ ग्रह जो इस भाव को देख रहे हों, अर्थात इन ग्रहों की इस स्थान पर दृष्टि हो तो यह संतति सुख, विद्या आदि विषयों से संबंधित अच्छे फल मिलते हैं।

रोग, शत्रु , कठिनाइयाँ

छठा भाव रोग, शत्रु और बाधाओं और कठिनाइयों का द्योतक है।

छठ्ठा भावाधिपति दूसरे स्थान पर रहने से आप पराक्रमशील हैं और कीर्ति के मालिक हैं। परदेश गमन की संभावना रखते हैं। आप मधुरभाषी हैं। आर्थिक स्थिति में परिवर्तन की संभावना है। आप सेहत से सशक्त और निरोगी रहेंगे।

छटवें स्थान का स्वामी मंगल ग्रह के साथ स्थित है। आपको चोरी डकैती द्वारा धन हानि का भय बना रहेगा।

वैवाहिक जीवन और सातवें स्थान की ग्रहदशा।

वैवाहिक जीवन से जुड़े हुए गुणदोष का निर्णय, सातवें स्थान, सप्तमेश, सप्तमकारक और अन्य ग्रहों की युति-दृष्टि के आधार पर किया जाता है।

सातवाँ भावाधिपति प्रथम स्थान पर है। किसी परीचित व्यक्ति के साथ अथवा पूरी तरह जांच पड़ताल करने के बाद विवाहित होने की संभावना है। आपकी पत्नी बुद्धिमति, कार्यकुशल और विवेकपूर्ण स्त्री होगी। आप कौमार्यकाल से ही सौन्दर्यवान बालिकाओं के प्रति आकर्षित होंगे। जीवनसाथी की पसंद में सौन्दर्य एक प्रमुख कारण रहेगा। आप संकुचित मनोभाव के व्यक्ति हैं; ऐसे आरोप लग सकते हैं। स्वास्थ्य के संरक्षण के लिए और उत्साहपूर्ण कार्यों के लिए पत्नी का सहयोग अनिवार्य रहेगा। पत्नी से मिला हुआ सहकार्य और सहयोग जीवन की सफलता का कारण बनेगा। आपका जन्म श्रेष्ठ परिवार में हुआ है, इस कारण कुल गौरव और कुल महिमा के बखान के आदि हैं। धन संपत्ति के व्यय से बचने के लिए पति-पत्नी दोनों को सतर्क रहना होगा।

पश्चिम दिशा से उत्तम जीवन संगिनी प्राप्त होने की संभावना रखते हैं।

चन्द्र सातवें स्थान पर है। अनेक प्रयास के बावजूद भी संजोगों के अधीन होकर आपके मन में ईर्ष्या और विकार पैदा होंगे। बाल्यावस्था से ही स्वजनों से दूर रहना पडेगा । अन्य सौन्दर्यवान व्यक्तियों के प्रति आप आकर्षित होंगे। जीवनसाथी के चुनाव में यह स्वभाव लाभदायक होगा। आप संकुचित मनोवृत्ति के हैं ऐसा भ्रम लोगों को होता रहेगा। स्वास्थ्य में आप तन्दुरस्त, चैतन्य और क्रियाशील व्यक्ति बनेंगे। इस कारण जीवन में सफलता आपका साथ देगी। आदर्श परिवार में जन्म लेने से श्रेष्ठ कुल के माने जायेंगे। आपकी संपत्ति का अयोग्य तरीके से व्यय नहीं होगा। इस विषय में आप निश्चिंत रह सकते हैं। मानसिक चंचलता पूरुषात्मक निर्बलता को जन्म दे सकती है।

चन्द्र गुरू के अधीन है। इस कारण आपका वैवाहिक जीवन मंगलमय और सुखद् रहेगा। यह निश्चित है।

सातवें स्थान पर गुरू की दृष्टि होने के कारण अनेक दोषपूर्ण फलों में कमी होगी। अनेक लाभ भी होंगे।

दीर्घायु , कठिनाईयां

आठवें भाव से दीर्घायु, वैधक चिकित्सा, मृत्यु, और अन्य कठिनाइयों का अध्ययन किया जाता है।

आठवाँ भावाधिपति तीसरे स्थान पर रहने से स्वजन और मित्रों से यथा समय पर सहायता से वंचित रहना पड़ेगा। उदासीन रहना पड़ेगा। सहकर्मचारियों से या परिवार के सदस्यों से ज़्यादा अपेक्षा रखना दु:ख का कारण बन सकता है। आलस्य के कारण सफलता दूरतम् होती जायेगी।

भाग्योदय, अनुभूतियाँ और पैत्रिक उपलब्धियों का विवरण।

नववा भावाधिपति तीसरे स्थान पर है। साहित्य कार्य से या वक्तृत्व कला के माध्यम से या अन्य किसी कलात्मक प्रक्रिया से किसी संस्था से धनार्जन होने की संभावना है। आप उपरोक्त कला में सफलता प्राप्त करने वाले पुरुष हैं। भाई बहन से सहयोग सुलभता से प्राप्त होगा। 'सहजगते सकृतपतौ रूप स्त्रीबंधु वत्सल: पुरुष:'

नववाँ भावाधिपति दुर्बल है। अनेक प्रकार के सद्गुणों से वंचित रहना पड़ेगा। भाग्योदय में अड़चने आएँगी ।

नवमें भाव में स्थान ग्रहण किया हुआ बृहस्पति सुख संपत्ति की प्राप्ती करानेवाला है। अनेक अनिष्ट कारक फलों से मुक्त रखने वाला है।

पेशा

फलदीपिका के श्लोको के अनुसार दसवां भाव व्यापार, श्रेणी या पद, कर्म, जय - विजय, कीर्ति, त्याग, जीविका, आकाश, स्वभाव, गुण, अभिलाषा, चाल या गति और अधिकार को सूचित करता है।

सर्वार्थ चिंतामणि के अनुसार ज्योतिषियों को दसवें भाव से काम (उद्योग) अधिकार, शक्ति, कीर्ति, वर्षा, विदेशों में जीवन, त्याग का मनोभाव, सम्मान, आदर, जीविका, व्यवसाय

या पेशा आदि का निर्णय करना चाहिए। आपके लिए सूचित किए गए ज्योतिष संबंधित व्यवसाय के अन्तर्गत दसवें भाव, उसमें उपस्थित अधिपति, ग्रह, सूर्य और चन्द्र का स्थान आदि तत्वों के विश्लेषण के आधार पर विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवें भाव का स्वामी लग्न में है। आप विद्वान,प्रसिद्ध,और धनिक होंगे। आपको काव्यमें रूचि होगी। यद्यपी बाल्यकाल में बीमारी की संभावना है पर समय के साथ स्वास्थ्य, धन, ऐश्वर्य आदि संतोषप्रद होंगे।

दसवें भाव में मीन राशी है, यह एक जलप्रधान राशि है जो गुरु के नियंत्रण में होती है, यह मत्स्य क्षेत्र, द्रावक, विदेशी व्यापार, तेल, समुद्र, वकालत, धार्मिक कार्यक्रमों, वकील, नौविधा, पोत परिवहन, प्राध्यापक और बैंक संचालन को सूचित करती है।

यह भी सूचित करता है कि आप समुद्रीय उत्पादन, समुद्रीय जीव विज्ञान, मछली पकडने का काम और जल शुद्धीकरण में सफलता पा सकते हैं।

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य दसवें भाव में उपस्थित हैं।

सारावली के अनुसार सूर्य दसवें भाव में स्थित हैं। आप बुद्धिमान होंगे, सुख भोगों का अनुभव करेंगे और वाहन सुख सुलभ होगा। आप सामर्थ्यवान, धनिक और धैर्यशाली होंगे। आप अपने पुत्र और रिश्तेदारों से खुश रहेंगे। यह निश्चय है कि आप जीवन में आगे बढकर एक आदरणीय और महत्वपूर्ण पद को संभालेंगे। आप अपने पिताजी से लाभ पा सकते हैं। आपकी विविध विषयों में दिलचस्पी होगी।

क्योंकि सूर्य मीन राशि में है आप धर्मशासक कार्यलय संबंधी काम और सरकारी कामकाज में अच्छी तरह अपना सामर्थ्य प्रकट कर सकते हैं। आपको एक विश्वसनीय सहकर्मी की ख्याति मिलेगी और आप अधिकार के पद पर पहुंचेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु दसवें भाव में है।

मन्त्रेश्वर के अनुसार क्योंकि केतु दसवें भाव में है आप विद्वान, शक्तिशाली, वेद और कला में कुशल होंगे। आप विद्वानों में बहुविज्ञ के समान होंगे और हमेशा यात्रा करना पसंद करते हैं। बहुत से पंडितों ने दसवें भाव में केतु की उपस्थिति को अत्यंत हानिकारक प्रकट करते हुए बताया है। कार्यों में स्कावट, बुरा व्यवहार और उद्योग में निरंतर बदलाव इसका उदाहरण है।

जन्मकुण्डली में उपस्थित ग्रहों के स्थानों के आधार पर प्रस्तुत किए गए विश्लेषण के अलावा कुछ अन्य नतीजे भी जन्म नक्षत्र से प्राप्त कर सकते हैं। आपके जन्म नक्षत्र से सम्बधित उद्योग क्षेत्र निम्नलिखित है।

आहार, चीनी, रेशम, रूई, रेलवे, रबड, हवाई जहाज या वायुयान में उडने की विद्या, पशु पालन, शेयर बाजार, होटल, अस्पताल, मुनीम, अर्थिक व्यवस्था विभाग, न्यायाधीश।

आमदनी

एकादश भाव जिसे लाभ स्थान भी कहते हैं आमदनी और आमदनी के मार्गों के विषय में सूचित करता है। यह स्थान कुंडली का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान समझा जाता है क्योंकि शास्त्रों के अनुसार ग्यारहवें स्थान में स्थित कोई भी ग्रह अशुभ फल नहीं देता।

ग्यारहवें भावाधिपति के दूसरे स्थान पर रहने से प्रत्येक दिशा से धन लाभ की संभावना है। अनेक विषयों में निपुणता प्राप्त होगी। स्वभाव से आप परोपकारी हैं। भक्तिपूर्ण कार्यों में अभिरूचि रखते हैं। धन एवं संपत्ति की अत्यधिक अभिवृद्धि का योग है।

बुध ग्यारहवें स्थान पर रहा है। आप विश्वसनीय व्यक्ति हैं। आप ज्ञान संपन्न व्यक्ति भी हैं। योग्य श्रेष्ठ मित्रजन प्राप्त होंगे। क्रय-विक्रय कार्य से जीवन में सफलता प्राप्त होगी।

शुक्र ग्यारहवें स्थान पर रहा है। श्रेष्ठ मित्र जीवन में उपलब्ध होंगे। आनन्दित करनेवाली संतान का योग है।

खर्च, व्यय, नष्ट

द्वादश भाव व्यय भाव कहलाता है। खर्च और धनहानि के विषय में इसी भाव से जानकारी मिलती है।

बारहवाँ भावाधिपति ग्यारहवें स्थान पर रहने से जीवन के प्रारंभकाल में अनेक कष्टों का सामना करना होगा। अनिष्ट घटनायें घटने की संभावना है। अपनी मालिकी की कोई वस्तु कठिनता से प्राप्त होगी। फिर भी अन्य लोगों से लाभ और संरक्षण प्राप्त होगा। आप अन्य बच्चों से भी अपनी संतानों के तुल्य स्नेह और सहयोग करने के आदी होंगे।

दशा / अपहार के फल

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मानव जीवन को भिन्न दशाओं में विभाजित किया गया है। ग्रहों के स्थान और स्थिति के अनुसार योग और योगों की शक्ति के अनुसार दशा-फल होता है। सत्ताईस नक्षत्रों को तीन तीन के समूह में बांट कर नौ दशाओं में विभाजित किया गया है। इनके अधिकार के समय को दशा कहते हैं। बच्चों के जो अप्रायोगिक फल होते हैं वे माँ-बाप को बाधक होते हैं। उसी तरह पति-पत्नी के बारे में भी फल का निर्णय करना है। तालिका देखकर दशाओं का आरंभ और अंत समझ लेना है। सप्तवर्गों के आधार पर ग्रहों का बलाबल निश्चित किया गया है।

गुरु दशा

इस दशा में परिवार के सदस्यों, साथियों और अन्य लोगों की सहायता प्राप्त होती है। उनकी सहायता से आपकी बड़ी उन्नति होगी। परिवार के बड़े या ऊपर के अधिकारियों का अनुकूल भाव बना रहेगा। बच्चों तथा मित्रों का स्नेह और प्यार आपको मिलेगा। इष्ट जनों से अलग रहना पड़ेगा। ई.एन.टी से संबन्धित रोग के लक्षण प्रकट होते ही डाक्टर से संपर्क करना उचित होगा। कानों में कोई न कोई रोग होने की संभावना है। जीवन में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त होगा। सफलता की चोटी पर पहुँचेंगे। अविवाहित लोगों के लिए विवाह के लिए और संतान प्राप्ति के लिए यह उचित समय माना जाता है। कोई सरकारी कार्य आपके हाथों में सौंपा जायेगा। सफलता और कीर्ति आपके पाँव चूमेगी। उच्च अधिकारियों से और बड़ों से प्रशंसा प्राप्त होगी। वे आपके कार्य से संतुष्ट होंगे। मित्रजनों से आनंद मिलेगा। यह सुख होते हुए भी कुछ मित्रों से बिछडना पड़ सकता है। गुरुदशा का आरंभकाल कष्टमय और अंतिम काल सुखद हो सकता है।

गुरु बलवान रहने से अनेक शुभ फल की प्राप्ति होगी। राज्यलाभ, ज्ञान वृद्धि, व्यवसाय वृद्धि और पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी।

इस दशाकाल में शिक्षा या ज्ञान पाने की बड़ी इच्छा होगी। अपना पूरा समय इस में लगाकर स्कूल में या कालेज या समाज में प्रसिद्ध बनने का अच्छा मौका है। इस दशा के उत्तरार्द्ध में सन्तान सुख और संपत्तिसुख प्राप्त होगा। आपका जीवन सुखमय रहेगा। किसी तीर्थयात्रा में या धार्मिक त्योहार में भाग लेना संभव है। पीले रंग की वस्तुएँ जैसे की सोना, पीतल आदि भाग्य सूचक हैं। विवेक और गंभीरता में वृद्धि होगी। बड़प्पन प्राप्त होगा।

(01-09-2021 >> 15-03-2024)

गुरु की दशा में शनि की अन्तर्दशा में आपका मन अनुचित कार्यों के प्रति आकर्षित होगा। आप को अनैतिक कार्य करने की इच्छा होगी। आपको अपने आत्मविश्वास में कमी होने का भ्रम होगा। अपने मन की शान्ति के लिए आप व्यसनों से दूर रहें तो उचित होगा। जन समर्थन में न्यूनता आ सकती है।

(15-03-2024 >> 21-06-2026)

बृहस्पति की दशा में बुध की अन्तर्दशा में आपकी प्रगति होगी। जिन वस्तुओं से वंचित रहना पड़ा था वह सरलता से प्राप्त होगी। आपको बहुमान्य व्यक्तियों का परिचय प्राप्त होगा। आप के हाथों से सत्कार्य घटित होंगे। पर इसके विरुद्ध आपको नीच लोगों के कारण अपवाद सहना पड़ेगा और आप को व्यर्थ का अपराधी बनाया जायेगा। अभ्यास क्षेत्र में उन्नति संभावित है।

(21-06-2026 >> 28-05-2027)

बृहस्पति दशा में केतु के अंतर में नौकरी यानी व्यवसाय बदलना पड़ सकता है। आपके जीवन में यह एक महत्वपूर्ण मोड़ का समय है। विदेश गमन का योग है। निर्णय करने से पूर्व सभी तथ्यों पर ध्यान अवश्य दें, अन्यथा हानि हो सकती हैं।

(28-05-2027 >> 26-01-2030)

बृहस्पति दशा में शुक्र के अंतर में बिना विश्राम के काम करना पड़ेगा। अनेक आश्चर्यजनक फलों की प्राप्ति होगी। आपको अपने प्रतिस्पर्धी का सामना करना पड़ेगा। अपने अधिकारों का उपयोग करने की इच्छा होगी। सत्याग्रह इत्यादि कार्यों में हिस्सा लेना पड़ेगा। विपरीत लिंग के लोग आपकी प्रगति में बाधा डालेंगे। आर्थिक स्थिति अच्छी होगी और आपकी मानसिक शक्ति दुगुनी बढ़ेगी। खण्डनात्मक कार्यों के प्रति अभिरुचि जाग्रत होगी। बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। आर्थिक लाभ की संभावना है। घर में विवाहादि मंगल कार्यक्रम हो सकते हैं। भू, भवन और वाहन के विषय में भी यह समय अच्छा रहेगा।

(26-01-2030 >> 14-11-2030)

गुरु दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में शत्रु आप से पराजित होंगे। अनेक सत्कार्य और मंगलमय घटनायें घटित होगी। मान्यता प्राप्त होगी। अनेक श्रेष्ठ व्यक्तियों से संबंध स्थापित होंगे। वाहन योग की संभावना है।

(14-11-2030 >> 15-03-2032)

बृहस्पति दशा में चन्द्र के अंतर में आप सब तरह के शारीरिक-भौतिक सुखों का अनुभव कर पायेंगे। लोग जो आपका सान्निध्य पसन्द न करते थे वे अब आप से मिलने जुलने की आशा के साथ आप के पास आयेंगे। यह जन सम्मति के लिए अच्छा समय है। विवाह, संतान और प्रगति विषय में भी यह समय उत्तम रहेगा।

(15-03-2032 >> 19-02-2033)

बृहस्पति दशा में मंगल के अंतर में आत्मविश्वास जाग्रत होगा। आपकी निडरता और साहस सीमातीत योग्यता नहीं मानी जायेगी। अनिष्ट कार्यों के प्रति मन लुभायेगा। आप प्रसिद्ध होंगे। आप को बचपन की मीठी बातों का संस्मरण करने का सन्दर्भ प्राप्त होगा।

(19-02-2033 >> 15-07-2035)

बृहस्पति दशा में राहु के अंतर में आपके द्वारा किए गये श्रेष्ठ कार्यों का विपरीत फल प्राप्त होगा। ऐसी परिस्थिति में पीछे हटना पड़ेगा। स्वनिवास स्थान से दूर हटकर शांत रहना लाभदायक होगा। पीड़ित स्वजनों की व्यथा देखकर मन व्याकुल होगा। शारीरिक विकार और मानसिक संताप होगा।

शनि दशा

शनि, दु:ख, अंगहीनता, रोग, कष्ट और अन्य मुसीबतों का देवता है। इस दशा में ऊँच-नीच, सुख-दु:ख दोनों का अनुभव होगा। सरकार या उच्च अधिकारियों के माध्यम से धन लाभ हो सकता है। अनेक सेवक और सहायकों से आपको सहायता मिलेगी। अच्छी आमदनी भी हो सकती है। व्यापार के भागीदार या सन्तान से सुख में कमी होने की संभावना है। कुछ कारणों से मन चंचल रहेगा। हाथों और पैरों में कोई पीड़ा होने की संभावना है। श्रेष्ठ नायक का पद सफलता पूर्वक संभाल पायेंगे। जीवन के उत्तरार्ध काल में शनिदशा के कारण, अपनों से बड़ी उम्र की महिला के साथ संपर्क होने की संभावना है। इस तरह का संपर्क यदि लंबे समय तक रहता तो अयोग्य बंधनों में फँसने की भी संभावना है। आप से हीन स्थिति में रहनेवाले व्यक्तियों से रिश्ता जुड सकता है। बड़प्पन, प्रतिष्ठा, सुवर्णाभूषण और धनादि की प्राप्ति होगी। धार्मिक स्थान के निर्माण में सहयोग देना संभव होगा।

शनि निर्बल दशा में रहा है। शुभ फलों की प्राप्ति में बाधा आयेगी।

पौष्टिक आहार और नियमित व्यायाम के अभाव के कारण शारीरिक दुर्बलता का अनुभव होगा। कोर्ट-कचहरी के धक्के खाने पड़ सकते हैं। अपनों से बड़ों के साथ झगड़ा हो सकता है। वियोग के संजोग सृजित होंगे। वियोग का दु:ख भोगना पड़ सकता है। प्रगति और सफलता के मार्ग में अनेक बाधायें आयेगी। उन बाधाओं से बचने के लिए अति श्रम करना पड़ेगा। दु:ख भोगना पड़ेगा। अकारण क्रोध उत्पन्न होगा।

(15-07-2035 >> 18-07-2038)

शनि की दशा में शनि की अन्तर्दशा में आप क्रोधी और झगडालू बनेंगे। छोटे छोटे झगड़ों से मन कलुषित होगा। इस प्रकार के व्यवहार के कारण बाद में पछताना होगा। आपको दूर देशों की यात्रा करनी पड़ेगी। आपका निवास स्थान अपने घर से दूर रहेगा। नीच वृत्ति के लोगों का सहवास रखना पड़ेगा।

(18-07-2038 >> 27-03-2041)

शनि की दशा में बुध की अन्तर्दशा में आप को अनेक प्रकार के लाभ होंगे। आपकी इच्छाएँ सफल होगी और लक्ष्यप्राप्ति भी होगी। प्रगति की अपेक्षा कर सकते हैं। कर्तव्यबोध जाग उठेगा। प्रोत्साहन और सहायता चारों ओर से आपको प्राप्त होगी। अप्रतिक्षित लोगों से सहायता मिलेगी। निवास स्थान में बदली होगी। नौकरी में स्थानान्तरण की आशंका है।

(27-03-2041 >> 06-05-2042)

शनि की दशा में केतु की अन्तर्दशा में आप को दु:ख होते रहेंगे। ध्यान और प्रार्थना से कुछ शाँति प्राप्त हो सकती है। संग्रहित की गई चीज़ें नष्ट होने की संभावना है। आपके मार्ग में असुविधाएँ और स्कावटें आती रहेगी। आपकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर अनेक नियंत्रण लगाये जायेंगे। निद्रा में भयभीत करनेवाले स्वप्न सतायेंगे।

(06-05-2042 >> 06-07-2045)

शनी दशा में शुक्र की अन्तर्दशा आपको अच्छे मित्र और सहयोगी प्राप्त करने के लिये अच्छी हैं। लोग आपके साथ समय बिताने के लिये आपके सहवास में आयेंगे और आप सभी उसका आनंद लेंगे। आर्थिक रूप से आप अपने सहयोगी द्वारा सुरक्षित बने रहेंगे। घर का नवीकरण या निर्माण हो सकता हैं। आपको अध्ययन में रूची होगी और आप कलात्मक उपक्रमों में समय गुजारेंगे।

(06-07-2045 >> 18-06-2046)

शनी दशा में सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान, आप अपने तथा अपने सहयोगियों के लिये कुछ कठिनाइयां महसूस करने के संकेत हैं। यह ऐसा समय हैं, कि जिसमें आप ईर्ष्यालु बनेंगे। आपको बहुत आशावादी होने से बचना चाहिये अन्यथा आपको अनिष्ट मुसिबतों का सामना करना पड़ सकता हैं। अप्रसन्नता और निराशा के कुछ क्षण हो सकते हैं। किसी परिस्थिती या अन्य व्यक्तियों को अपने मन की शांती भंग करने ना दें।

बुध दशा

15-07-2054 से प्रारंभ

इस दशा में बड़े लोगों की सहायता प्राप्त होगी। ज़मीन, जानवर, चिड़िया और अच्छे साथियों से आनन्द प्रदान होगा। लोगों के सहायक होने से उनका आदर और प्यार आपको प्राप्त होगा। आध्यात्मिकता और दानशीलता आपके गुण बने रहेंगे। इस दशा में स्वास्थ्य संबन्धी बाधा कभी कभी हो सकती है। व्यक्तिगत उन्नति तथा साहित्यिक प्रवृत्तियों के विकास के लिए यह समय उपयुक्त रहेगा। आप जो स्नातक हों तो उपरोक्त कार्य से बड़ा लाभ होगा। नए भवन निर्माण या प्राप्ति होगी। स्त्री-पुत्रादि विषयक फल प्राप्त होंगे।

सप्तवर्गीय गणित में बुध बलवान है। अधिकतर शुभ फल प्राप्त होंगे।

इस दशा में अच्छी शिक्षा या ज्ञान प्राप्त करने का योग होगा। लिखना, पढना, व्याख्यान (भाषण) देना आदि में पूरा समय लग जा सकता हैं। दूसरे लोग आपके अधिकार में रहेंगे। व्यापारिक कार्यों में एक मध्यवर्ती होकर अच्छा लाभ प्राप्त होगा। किसी वस्तु के उत्पादन के एजेंट होकर या किसी प्रकाशन से अच्छी आमदनी मिलने की संभावना है। मित्रों और रिश्तेदारों की सहायता मिलेगी। उत्तर की ओर यात्रा संभव है और खूब धन कमाने का योग है। युवा लोगों के परिचय से भी अच्छा लाभ प्राप्त होगा। लेखन-प्रकाशन का काम भी लाभदायक रहेगा।

ग्रह दोष और उपाय

मांगलिक दोष

जन्मपत्रिका में मंगल के प्रभाव को बहुत अधिक महत्व प्राप्त है। मंगल या कुज का विवाह संबन्धी विषयों तथा गुणमेंलन आदि के विश्लेषण में बहुत महत्व है। सामन्य तया जब मंगल जन्मकुंडली के सातवें या आठवें या द्वादश भाव में हो तो मंगल दोष माना जाता है। शास्त्रोक्त ग्रन्थों में मंगल के प्रभाव को बताते हुए अनेक नियमों का संग्रह दिया गया है। उन नियमों के आधार से यह पता चलता है कि सातवें या आठवें स्थान पर रहते हुए मंगल, दोष ग्रस्त होकर भी उसका दुष्प्रभाव कुछ कारनों से क्षीण हो जाता है। कुज दोष या मंगलदोष को समझने के लिये यहाँ विस्त्रित रूप से विश्लेषण किया गया है। निम्न लिखित बातों से पता चलता है कि आपकी जन्मपत्रिका में मंगल किस प्रकार शुभ-अशुभ फल उत्पन्न करता है।

इस जन्मपत्रिका में मंगल, जन्म कुंडली में दूसरा स्थान पर है।

यह स्थिती मंगल दोषयुक्त है और कुछ हद तक अमंगलकारी है।

जन्मकुंडली में लग्न स्थान की स्थिति के अनुसार मंगलदोष का विश्लेशण किया गया है।

इस जन्मकुंडली में मंगल का दोष दिखाई देता है।

स्पष्टीकरण

आत्मविश्वास और मेहनत से आप रास्ते में आनेवाली चुनौतीयों का सामना कर सकते हैं। सच्चा स्वभाव आपका पारिवारिक जीवन सुखी बनायेगा। ख़र्च करते समय विचारपूर्ण रहें और अचानक होने वाले खर्च के लिए तैय्यार रहे। पारिवारिक विवादों का आपके विचार और काम पर परिणाम न होने दें। चतुरता से पेश आने से और पारिवारिक सदस्योंसे मित्रता से पेश आने से आप तनाव दुर कर सकते हैं। बुरी संगत के बुरे परिणाम टालने से आप सुखी बनेंगे। आपको कुछ कठिनाईयाँ और कानून संबंधी कृतीयों का सामना करना पड सकता है। अच्छे जीवन हेतू आपके अच्छे मित्र आपको जादा आत्मविश्वासी बना सकते हैं।

उपचार

द्वितीय घर के मंगल के अशुभ परिणाम कम करने हेतू, आप निचे दिये उपाय कर सकते हैं।

आप दो सुमंगली स्त्रीयों को अन्नदान और वस्त्रदान कर सकते हैं। सुब्रमण्यम के मंदिर जाकर कठीण व्रत के साथ आप भगवान की पुजा करें। नवग्रह की भी पुजा करें।

राहु दोष और केतु दोष

राहु और केतु अस्पष्ट ग्रह है। उनकी गति परस्पर संबंधित है और एक ही अंग के भाग होने के कारण दोनों हर समय वह एक दुसरों कें विरुद्ध होते है, किन्तु दृष्टि सें विचार करते हुए, वह एक दुसरों सें संबंधित है।

सामान्य रूप सें, राहु सकारात्मक है और गुरू के प्रती लाभदायी है और इसलिए वह विकास और स्व-मदद कें लिए कार्य करता है और केतु बंधन और शनी के विघ्न को दर्शाता है और इसलिए विकास में बाधा लाता है। इस प्रकार, राहु सकारात्मक उद्देश्य दर्शाता है और केतु विकास की सहज संधि दर्शाता है।

इसलिए, राहु भौतीकवाद और इच्छा सूचित करता है, तथा केतु आध्यात्मिक प्रवृत्ति और भौतीकवाद की सूक्ष्म प्रक्रिया दर्शाता है। राहु को कपट, धोखा और बेईमानी के लिए माना जाता है।

राहु दोष

आप सभी परिस्थीतीयों को सहने हेतु चतुर रहेंगे और आप सुखी पारिवारिक जीवन पायेंगे। आपको पैसा कमाने का रास्ता मिलेगा किन्तु आपकी इच्छा के तहत कुछ नही मिलेगा। मितव्ययी ख़र्चा करने से आपके परिवार के लिए बचत होगी। पैसे संबंधी व्यवहार करते समय आपने धोकेबाजी पर ध्यान देना चाहिए और ऋणग्रस्त होना टालना चाहिए। खुद को असमाधनकारक परिणामों के तहत प्रोत्साहित करते रहने सें आपको उत्तम जीवन प्राप्त होगा। चतुराई से योजना बनाने से आप घर, जमिन और गाडी की इच्छा पुरी कर सकते हैं। निजी सुखों पर ज्यादा ध्यान देने से जीवन दुखी बन सकता है। साथी और बच्चो की जरूरतें समझ लेने से आपको धन की कमी होने के बावजूद भी सफलता का अनुभव आयेगा।

राहु दोष के उपाय

राहु के अशुभ परिणाम कम करनें हेतु, आप निचे दिये उपाय कर सकते हैं।

सर्पयंत्र लेकर समर्पीत भाव से पहनें।

वैदिक प्रतिष्ठा पद्धती से नवग्रह देवता की रचना करके काली दाल लेकर उसका राहु को भोग दिखाएँ। (दक्षीण-पश्चीम दिशा में बैठकर चेहरा पूर्व दिशा में रखें)

कुछ प्रमाण में छिलको वाली काली दाल लें और उसे सोने से पहले तकिये कें निचे रख दें। आपको उस दाल को सुबह सिर के चारोंओर गोल घुमाकर कौवे को डालना चाहिए। यह लगातार ९ दिन करें, और १० वे दिन भगवान शिव या देवी के मंदीर में स्वेच्छा से दान करके दर्शन लें।

कुछ मंदिरों में बरगद का पेड और निम का पेड लगा मिलता है, और उसके पास नाग देवता होते हैं। ऐसे देवता को हलदी का अभिषेक करकें परिक्रमा करें।

सुब्रमण्यम स्वामी को बेल पत्री अर्पण करें।

जीवन में राहु का परिणाम कम करने हेतु हररोज निचे दिया गया श्लोक पढें।

Asmik Mandale Adhidevatha	आस्मिक मंडले अधिदेवता
Prathyadhidevatha Sahitham Rahugraham	प्रत्याधिदेवता सहिथम राहुग्रहम
Dhyaayaami Aavahayaami.	ध्यायामी अवहायामि.
Shreem Om Namo Bhagavathi Shree Shoolini	श्री ॐ नमो भगवती श्री शूलिनि
Sarva Bhootheswari Jwala Jwalamayi Suprada	सर्व भुतेश्वरी ज्वाला ज्वाला मायि सुप्रदा
Sarva Bhoothaadi Doshaya Doshaya	सर्व भुतादि दोषाया दोषाया
Rahur Graha Nipeedithaath Nakshathre	राहुर ग्रह निपीदिथात नक्षत्र
Rashou Jaatham Sarvaanaam Mam	राशोउ जाथम सर्वनाम माम
Mokshaya Mokshaya Swaha.	मोक्षया मोक्षया स्वाः

केतु दोष

इस जन्मकुंडली मे केतु दोष नही है।

केतु दोष हेतु उपाय

आपकी जन्मकुंडली में केतु दोष न होने से, आपने यह उपाय करने की जरूरत नही हैं।

गोचर फल

नाम	: GANESH S (पुरुष)
जन्म राशी	: धनु
जन्म नक्षत्र	: पूर्वाषाढा
ग्रहस्थिती	: 6-जनवरी-2023
अयनांश	: चैत्रपक्ष

सूर्य का गोचर फल।

सूर्य एक राशि में एक महीने तक एक भाव का स्थान ग्रहण करता है।

(15-दिसम्बर-2022 >> 14- जनवरी-2023)

इस समय सूर्य जन्म भाव से संचार करेगा।

परिवर्तन की श्रृंखला आप के जीवन में आनेवाली हैं। शारीरिक, मानसिक और हर क्षेत्र में बदलाहट का अनुभव होगा। सहयोगियों का आप के प्रति व्यवहार बदलेगा। उनका व्यवहार आनंदपूर्ण रहेगा। पारिवारिक और जातीय मामलों में अति व्यस्त रहना होगा। क्रोध और ज्वर से बचें।

(14-जनवरी-2023 >> 13- फरवरी-2023)

इस समय सूर्य दूसरा भाव से संचार करेगा।

अनेक प्रकार के कष्ट और नुकसान का अनुभव होगा। यह विपरीत परिस्थिति थोडे समय तक चलने वाली है। परिस्थिति में अवश्य ही सुधार होगा। आर्थिक समस्या खडी होगी। चिंता की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि अपने आप उसका निराकरण भी होगा। सिर और आंखों की अस्वस्थता का प्रतिरोध करते रहना चाहिए। डाक्टरी जाँच आवश्यक बनेगी। वाणी में कटुता प्रकट होगी। संयम से रहें।

(13-फरवरी-2023 >> 15- मार्च-2023)

इस समय सूर्य तिसरा भाव से संचार करेगा।

परिस्थिति में सुधार होगा। परिवर्तन के कारण मानसिक शांति प्राप्त होगा। आर्थिक स्थिति लाभदायक बनी रहेगी और इससे मानसिक शांति की अनुभूति मिलेगी। अनेक मार्ग से लाभ होता रहेगा। सफलता का समय है। अपनी कार्यशक्ति अभिव्यक्त करने का यथा योग्य समय है। वर्ष की एक महान उपलब्धि का समय है। अपने प्रयत्न में कोई कमी न आने दें।

गुरु का गोचर फल।

बृहस्पति एक राशि में करीब एक साल तक रहता है। यह एक प्रधान ग्रह है और बहुत से फल इसके आधार पर बताये जाते हैं।

(14-अप्रैल-2022 >> 22- अप्रैल-2023)

इस समय गुरु चौथा भाव से संचार करेगा।

आपको अपने संबन्धियों की समस्या और शारीरिक स्वास्थ्य की चिंता सतायेगी। संबन्धी लोग अपनी समस्याओं को लेकर आपको तकलीफ़ देंगे। आर्थिक दशा इस समय अच्छी न होने से कठिनाई का सामना करना होगा। अपनी स्वयं की कठिनाइयों के कारण दूसरों को सहारा देना असंभव होगा। अचल संपत्ति विषयक विवाद हो सकता है। सतर्क रहें।

(23-अप्रैल-2023 >> 1- मई-2024)

इस समय गुरु पांचवा भाव से संचार करेगा।

बृहस्पति का श्रेष्ठ प्रभाव आप पर होने से आपकी मान्यता बढ़ेगी और पदोन्नति भी प्राप्त होगी। निवास स्थान बच्चों के मधुर किल्लोल से गूँज उठेगा। धन और शान्ति दोनों प्राप्त होंगे। घर के निर्माण का या दूसरे देश में जाने के लिए अच्छा समय है। मानसिक स्वस्थता प्राप्त होगा। सिफ़ारिशों के माध्यम से मुलाकात के लिए धैर्य के साथ कम लें, सफलता प्राप्त होगी। नए कपड़े या आभूषण मिलना संभव हैं। लेखन और प्रकाशन संबन्धी काम सफल होंगे।

शनि का गोचर फल।

शनि सामान्यत: दु:ख देनेवाला ग्रह है और उसका प्रभाव दु:ख उत्पन्न करता रहता है। पर कुछ स्थानों में वह खूब लाभदायक फल भी देता है। शनि एक राशि से दूसरी राशि में ढाई वर्ष में पहुँचता है।

(13-जुलाई-2022 >> 17- जनवरी-2023)

इस समय शनि दूसरा भाव से संचार करेगा।

शनि की साढ़ेसाती का अन्तिम चरण चल रहा है। सामान्य उद्वेग और उदासीनता आप के मन को घेरी रहती है। आपको शुभ समय की प्रतीक्षा रहती है। छोटी बातों को बढ़ाकर झगड़ा बनाने का मौका न दिया जाये। धन की रक्षा में ध्यान दीजिये।

(18-जनवरी-2023 >> 29-मार्च-2025)

इस समय शनि तिसरा भाव से संचार करेगा।

शनि आपके लिए इस समय अनुकूल है। अच्छे कार्य होंगे और सभी दिशाओं से सुखद समाचार प्राप्त होंगे। आपकी कार्यशक्ति और योग्यताएँ बढ़ेगी। सन्मान प्राप्त होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। अविचारित रूप में आप को धन का लाभ होगा। संपन्नता की कभी कमी नहीं होगी। भौतिक सुविधाएँ भी प्राप्त होगी। तन्दुरुस्ती बढ़ती रहेगी। आपको अपने लक्ष्य की प्राप्ति होने वाली है। विजयश्री आपके पक्ष में रहेगी।

अनुकूल समय

उद्योग या व्यवसाय के लिए अनुकूल समय

लग्न अधिपति, दशमेश, दशम भाव और लग्न में उपस्थित शुभ ग्रह, लग्न और दशम भाव में बृहस्पति का दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर दशाकाल / अपहार आदि के अध्ययन के बाद उचित और श्रेष्ट समय ज्ञात किया जाता है।

15 उम्र से लेकर 60 उम्र तक का विश्लेषण।

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
मंगल	गुरू	30-12-1995	05-12-1996	अनुकूल
मंगल	बुध	13-01-1998	11-01-1999	अनुकूल
राहु	गुरू	27-03-2004	21-08-2006	अनुकूल
राहु	बुध	26-06-2009	14-01-2012	अनुकूल
गुरू	शनी	01-09-2021	15-03-2024	अनुकूल
गुरू	बुध	15-03-2024	21-06-2026	श्रेष्ट
गुरू	केतु	21-06-2026	28-05-2027	अनुकूल
गुरू	शुक्र	28-05-2027	26-01-2030	अनुकूल
गुरू	सूर्य	26-01-2030	14-11-2030	अनुकूल
गुरू	चंद्र	14-11-2030	15-03-2032	अनुकूल
गुरू	मंगल	15-03-2032	19-02-2033	अनुकूल
गुरू	राहु	19-02-2033	15-07-2035	अनुकूल

गुरू के विविध घरों में विशेष रूप से चतुर्थ भाव से संचार और दृष्टी का अध्ययन कर निम्न समय आपके करीयर के लिए योग्य पाये गये हैं।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
25-12-1996	08-01-1998	अनुकूल
26-05-1999	02-06-2000	अनुकूल
17-06-2001	05-07-2002	अनुकूल
31-07-2003	28-08-2004	अनुकूल
29-09-2005	28-10-2006	अनुकूल
11-12-2008	01-05-2009	अनुकूल
31-07-2009	20-12-2009	अनुकूल
09-05-2011	17-05-2012	अनुकूल
01-06-2013	19-06-2014	अनुकूल
15-07-2015	11-08-2016	अनुकूल
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
31-03-2020	30-06-2020	अनुकूल
21-11-2020	06-04-2021	अनुकूल
15-09-2021	21-11-2021	अनुकूल
23-04-2023	01-05-2024	अनुकूल
16-05-2025	18-10-2025	अनुकूल
06-12-2025	02-06-2026	अनुकूल
01-11-2026	25-01-2027	अनुकूल
27-06-2027	26-11-2027	अनुकूल
29-02-2028	24-07-2028	अनुकूल
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
06-03-2032	12-08-2032	अनुकूल

व्यापार के लिए अनुकूल समय

द्वितीयेश, नवमेश, दशमेश, एकादशेश पर गुरु की दृष्टी बृहस्पति, लग्न और ग्यारहवें भाव पर बृहस्पति का दृष्टि, और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर व्यापार के लिए अनुकूल और श्रेष्ट समय को ज्ञात किया जाता है।.

15 उम्र से लेकर 60 उम्र तक का विश्लेषण।

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
चंद्र	शुक्र	15-05-1992	13-01-1994	अनुकूल
चंद्र	सूर्य	13-01-1994	15-07-1994	अनुकूल
मंगल	राहु	11-12-1994	30-12-1995	अनुकूल
मंगल	गुरू	30-12-1995	05-12-1996	श्रेष्ट
मंगल	शनी	05-12-1996	13-01-1998	श्रेष्ट
मंगल	बुध	13-01-1998	11-01-1999	श्रेष्ट
मंगल	केतु	11-01-1999	09-06-1999	अनुकूल
मंगल	शुक्र	09-06-1999	08-08-2000	अनुकूल
मंगल	सूर्य	08-08-2000	14-12-2000	अनुकूल
मंगल	चंद्र	14-12-2000	15-07-2001	श्रेष्ट
राहु	गुरू	27-03-2004	21-08-2006	अनुकूल
राहु	शनी	21-08-2006	26-06-2009	अनुकूल
राहु	बुध	26-06-2009	14-01-2012	अनुकूल
राहु	चंद्र	26-12-2016	27-06-2018	अनुकूल
राहु	मंगल	27-06-2018	15-07-2019	अनुकूल
गुरू	शनी	01-09-2021	15-03-2024	श्रेष्ट
गुरू	बुध	15-03-2024	21-06-2026	श्रेष्ट
गुरू	केतु	21-06-2026	28-05-2027	अनुकूल
गुरू	शुक्र	28-05-2027	26-01-2030	अनुकूल
गुरू	सूर्य	26-01-2030	14-11-2030	अनुकूल
गुरू	चंद्र	14-11-2030	15-03-2032	श्रेष्ट
गुरू	मंगल	15-03-2032	19-02-2033	श्रेष्ट
गुरू	राहु	19-02-2033	15-07-2035	अनुकूल

गुरू के विविध घरों में विशेष रूप से एकादश और द्वितीय भावों से संचार और दृष्टी का अध्ययन कर निम्न समय आपके व्यवसाय के लिए योग्य पाये गये हैं।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
12-10-1993	10-11-1994	अनुकूल
25-12-1996	08-01-1998	अनुकूल
26-05-1999	02-06-2000	अनुकूल
17-06-2001	05-07-2002	अनुकूल
31-07-2003	28-08-2004	अनुकूल
29-09-2005	28-10-2006	अनुकूल
11-12-2008	01-05-2009	अनुकूल
31-07-2009	20-12-2009	अनुकूल
09-05-2011	17-05-2012	अनुकूल
01-06-2013	19-06-2014	अनुकूल
15-07-2015	11-08-2016	अनुकूल
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
31-03-2020	30-06-2020	अनुकूल
21-11-2020	06-04-2021	अनुकूल
15-09-2021	21-11-2021	अनुकूल
23-04-2023	01-05-2024	अनुकूल
16-05-2025	18-10-2025	अनुकूल
06-12-2025	02-06-2026	अनुकूल
01-11-2026	25-01-2027	अनुकूल
27-06-2027	26-11-2027	अनुकूल
29-02-2028	24-07-2028	अनुकूल
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
06-03-2032	12-08-2032	अनुकूल

ग्रह निर्माण के लिए अनुकूल समय

चौथे भाव के अधिपति, चौथे भाव पर शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टी, चौथे भाव के स्वामी की गोचर स्थिति, इत्यादि विषयों को ध्यान में रख कर दशा अंतरदशा और अन्य बातों का विस्तृत अध्ययन करने के उपरान्त गृह निर्माण, निर्माणारंभ, द्वार की दिशा, मुख और चौखट आदि के मुहूर्त और समय ज्ञात किये जाते हैं, और निर्माण के लिए अनुकूल समय ज्ञात किया जाता हैं।

15 उम्र से लेकर 80 उम्र तक का विश्लेषण।

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
चंद्र	शुक्र	15-05-1992	13-01-1994	अनुकूल
मंगल	बुध	13-01-1998	11-01-1999	अनुकूल
मंगल	शुक्र	09-06-1999	08-08-2000	अनुकूल
राहु	बुध	26-06-2009	14-01-2012	अनुकूल
राहु	शुक्र	31-01-2013	01-02-2016	अनुकूल
गुरु	बुध	15-03-2024	21-06-2026	अनुकूल
गुरु	शुक्र	28-05-2027	26-01-2030	अनुकूल
शनी	बुध	18-07-2038	27-03-2041	अनुकूल
शनी	शुक्र	06-05-2042	06-07-2045	अनुकूल
बुध	केतु	11-12-2056	08-12-2057	अनुकूल
बुध	शुक्र	08-12-2057	08-10-2060	श्रेष्ट

गुरू के विविध घरों में विशेष रूप से चतुर्थ भाव से संचार और दृष्टी का अध्ययन कर निम्न समय आपके ग्रह निर्माण के लिए योग्य पाये गये हैं।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
12-10-1993	10-11-1994	अनुकूल
25-12-1996	08-01-1998	अनुकूल
26-05-1999	02-06-2000	अनुकूल
17-06-2001	05-07-2002	अनुकूल
31-07-2003	28-08-2004	अनुकूल
29-09-2005	28-10-2006	अनुकूल
11-12-2008	01-05-2009	अनुकूल
31-07-2009	20-12-2009	अनुकूल
09-05-2011	17-05-2012	अनुकूल
01-06-2013	19-06-2014	अनुकूल
15-07-2015	11-08-2016	अनुकूल
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
31-03-2020	30-06-2020	अनुकूल

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
21-11-2020	06-04-2021	अनुकूल
15-09-2021	21-11-2021	अनुकूल
23-04-2023	01-05-2024	अनुकूल
16-05-2025	18-10-2025	अनुकूल
06-12-2025	02-06-2026	अनुकूल
01-11-2026	25-01-2027	अनुकूल
27-06-2027	26-11-2027	अनुकूल
29-02-2028	24-07-2028	अनुकूल
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
06-03-2032	12-08-2032	अनुकूल
24-10-2032	18-03-2033	अनुकूल
07-04-2035	15-04-2036	अनुकूल
11-09-2036	17-11-2036	अनुकूल
27-04-2037	16-09-2037	अनुकूल
18-01-2038	11-05-2038	अनुकूल
08-10-2038	03-03-2039	अनुकूल
03-06-2039	04-11-2039	अनुकूल
07-04-2040	29-06-2040	अनुकूल
04-12-2040	06-05-2041	अनुकूल
01-08-2041	02-01-2042	अनुकूल
11-06-2042	28-08-2042	अनुकूल
17-02-2044	02-03-2045	अनुकूल
23-03-2047	18-08-2047	अनुकूल
12-10-2047	28-03-2048	अनुकूल
14-08-2048	28-12-2048	अनुकूल
04-04-2049	27-08-2049	अनुकूल
09-03-2050	02-04-2050	अनुकूल
20-09-2050	16-10-2051	अनुकूल
16-11-2052	15-12-2053	अनुकूल

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
31-01-2056	13-02-2057	अनुकूल

With best wishes : ASTRO LIFE.CLICK
POWERD BY : SPARKLE ENTERPRISES
2/305/33, MAHANATHI STREET,
JEYARAM NAGAR, ATHIPATTI,
ARUPPUKOTTAI - 626 101.
VIRUDHUNAGAR DISTRICT
TAMIL NADU. INDIA.

LifeSign 14.0.0 Build 17 IAS_3620067839253687

Note:
This report is based on the data provided by you and the best possible research support we have received so far. We do not assume any responsibility for the accuracy or the effect of any decision that may be taken on the basis of this report.